Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

**अल्लाह तआला का आदेश**

فَمَنۡ کَانَ مِنۡکُمۡ مَّرِیۡضًا اَوۡ عَلٰی سَفَرٍ فَعِدَّۃٌ مِّنۡ اَیَّامٍ اُخَرَ ؕ وَعَلَی الَّذِیۡنَ یُطِیۡقُوۡنَہٗ فِدۡیَۃٌ طَعَامُ مِسۡکِیۡنٍ ؕ

(सूरः अल् बकरः : 185)

अनुवाद : यदि कोई व्यक्ति बीमार है या यात्रा पर है, तो (उसे) दिनों की संख्या (पूरी) करनी होगी, और जिनके पास ताकत नहीं है (यानी उपवास), उसके लिए (फ़ीदया के रूप में) अनिवार्य है किसी गरीब का खाना दे दे (समर्थ के अनुसार अनिवार्य है)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ  نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ  وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-17

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

06 शवाल 1444 हिज्री कमरी, 27 शहादत 1402 हिज्री शम्सी, 27 अप्रैल 2023 ई.

**अख़बार-ए-अहमदिया**

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

## ख़ुत्बः जुमअः

"इस सदी के आरंभ पर जो ख़ुदा की तरफ़ से तजदीद-ए दीन के लिए आने वाला था वह मैं ही हूँ ता वह ईमान जो ज़मीन पर से उठ गया है उस को पुनः क़ायम करूँ और ख़ुदा से क़ुव्वत पा कर उसी के हाथ की कशिश से दुनिया को इस्लाह और तक़्वा और रास्तबाज़ी की तरफ़ खींचूँ। और उनकी एतेक़ादी और अमली ग़लतियों को दूर करूँ" (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"एक गिरोह और है जो आख़िरी ज़माना में ज़ाहिर होगा वह भी अव्वल तारीकी और गुमराही में होंगे और इलम और हिक्मत और यक़ीन से दूर होंगे तब ख़ुदा उनको भी सहाबा के रंग में लाएगा"

"जिस हालत में मसीह मौऊद और फ़ारसीउल असल का ज़माना भी एक ही है और काम भी एक ही है अर्थात ईमान को दुबारा क़ायम करना। इसलिए यक़ीनी तौर पर साबित हुआ कि मसीह मौऊद ही फ़ारसी-उल असल है और इसी की जमाअत के हक़ में यह आयत है وَّ اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا بِہِمۡ

"ख़ुदा तआला ने मुझे चौधवीं सदी के आरंभ पर इस तजदीद-ए-ईमान और मार्फ़त के लिए अवतरित फ़रमाया है और इस की ताईद और फ़ज़ल से मेरे हाथ पर आसमानी निशान ज़ाहिर होते हैं और इसके इरादा और मसलेहत के मुवाफ़िक़ दुआएं क़बूल होती हैं"

आज मुस्लमान अगर इस हक़ीक़त को समझ लें कि जो मसीह व महदी आने वाला था वह आ गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी आशिक़ और गुलाम-ए-सादिक़ भी यही है और इस की बैअत में आना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के कारण ज़रूरी है और कामिल वफ़ा के साथ उसकी बैअत में शामिल हो जाएं तो मुस्लमान उनको मानने के बाद दुनिया में अपनी बरतरी मनवा सकते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने वाले बन सकते हैं अन्यथा यही उनका हाल रहना है जो हो रहा है। अल्लाह तआला उनको अक़्ल समझ दे।

23 मार्च का दिन जमाअत अहमदिया में यौम-ए-मसीह मौऊद के नाम से जाना जाता है। कल तेईस मार्च थी। हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें अल्लाह तआला ने अपने वादे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के अनुसार भेजे हुए ज़माने के इमाम, मसीह मौऊद और मह्दी माहूद को मानने की तौफीक अता फ़रमाई

यौम-ए-मसीह मौऊद की मुनासबत से हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में में सूरः जुमा की आयात की तफ़सीर, मौऊद मसीह के ज़माने की मुख़्तलिफ़ निशानियों, मुख़्तलिफ़ भविष्यवाणियों तथा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दावे का संक्षिप्त वर्णन

दुनिया मे बसने वाले अहमदी, पाकिस्तान, बुर्कीना फासो और बंगलादेश के अहमदियों तथा दुनिया के तबाही से बचने के लिए दुआ की तहरीक

अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल के रोज़नामा होने पर उसे पढ़ने और ख़रीदने की तहरीक तथा अल्फ़ज़ल में लिखने वालों के लिए दुआइया कलिमात

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 24 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشۡھَدُ اَنۡ لَّاۤ اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَحۡدَہٗ لَا شَرِیۡکَ لَہٗ
وَاَشۡھَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبۡدُہٗ وَ رَسُوۡلُہٗ
اَمَّا بَعۡدُ فَاَعُوۡذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیۡطٰنِ الرَّجِیۡمِ-
بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ-
اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ○ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ○
مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ○ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ○
اِھۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ○ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ ۬ۙ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ
عَلَیۡہِمۡ وَ لَا الضَّآلِّیۡنَ ○
ھُوَ الَّذِیۡ بَعَثَ فِی الۡاُمِّیّٖنَ رَسُوۡلًا مِّنۡہُمۡ یَتۡلُوۡا عَلَیۡہِمۡ اٰیٰتِہٖ وَ یُزَکِّیۡہِمۡ وَ یُعَلِّمُہُمُ
الۡکِتٰبَ وَ الۡحِکۡمَۃَ ٭ وَ اِنۡ کَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ لَفِیۡ ضَلٰلٍ مُّبِیۡنٍ ۔ وَّ اٰخَرِیۡنَ مِنۡہُمۡ لَمَّا یَلۡحَقُوۡا
بِہِمۡ ؕ وَ ھُوَ الۡعَزِیۡزُ الۡحَکِیۡمُ ۔ (الجمعة:3-4)

इन आयात का अनुवाद है कि वही है जिसने उम्मी लोगों में इन्ही में से एक अज़ीम

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

रसूल अवतरित किया। वह उन पर इस की आयात की तिलावत करता है और उन्हें पाक करता है और उन्हें किताब की और हिक्मत की तालीम देता है जबकि इस से पहले वह यक़ीनन खुली खुली गुमराही में थे। और इन्ही में से दूसरों की तरफ़ भी

(उसे अवतिरत किया है) जो अभी उनसे नहीं मिले। और वह कामिल ग़लबा वाला (और) साहब-ए-हिक्मत है।

23 मार्च का दिन जमाअत अहमदिया में यौम-ए-मसीह मौऊद के नाम से जाना जाता है।

कल तेईस मार्च थी। हम ख़ुश-क़िस्मत हैं कि हमें अल्लाह तआला ने अपने वादे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों के मुताबिक़ भेजे हुए ज़माने के इमाम, मसीह मौऊद और महदी माहूद को मानने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। 23 मार्च 1889 ई. को लुधियाना में आप ने मख़्लेसीन से पहली बैअत ली और यूं मख़्लेसीन की एक जमाअत का क़ियाम अमल में आया। क़ुरआन-ए-करीम की सूरः जुमा की जो आयात मैंने तिलावत की हैं उनमें आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के गुलाम-ए-सादिक़ के आने और इस के ज़रिया से एक जमाअत के क़ियाम की ख़बर दी गई है। इस के इलावा क़ुरआन-ए-करीम में मसीह मौऊद की आमद के बारे में और भी आयात हैं। इस के इलावा हदीसों में भी आने वाले मसीह मौऊद और महदी माहूद के आने की भविष्यवाणियाँ हैं।

इस वक़्त मैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में

सूरः जुमा की इन आयात की वज़ाहत और जो मुख़्तलिफ़ निशानियां आने वाले के ज़माने की बताई गई थीं और जो मुख़्तलिफ़ भविष्यवाणियाँ थीं और फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का अपना दावा किया था वह संक्षिप्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के शब्दों में में पेश करूँगा।

आयत की तफ़सीर में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "इस आयत का माहसल यह है कि ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने ऐसे वक़्त में रसूल भेजा कि लोग इलम और हिक्मत से बे-बहरा हो चुके थे और दीन के उलूम-ए-हिकमत जिनसे तकमील अन्फ़ुस हो और नसानी नफ़ूस इलमी और अमली कमाल को पहुँचें बिल्कुल गुम हो गए थे। नफ़स की इस्लाह के सारे पहलू ख़त्म हो गए थे। "और लोग गुमराही में ग्रस्त थे। अर्थात ख़ुदा और उस की स्रात-ए-मुस्तक़ीम से बहुत दूर जा पड़े थे। तब ऐसे वक़्त में ख़ुदा तआला ने अपना रसूल उम्मी भेजा और इस रसूल ने उनके नफ़्सों को पाक किया और इलमुल किताब और हिक्मत से उनको ममलू किया यानी निशानों और चमत्कार से मर्तबा यकीन-ए-कामिल तक पहुंचाया और ख़ुदा शनासी के नूर से उनके दलों को रोशन किया और फिर फ़रमाया कि

एक गिरोह और है जो आख़िरी ज़माना में ज़ाहिर होगा वह भी अव्वल तारीकी और गुमराही में होंगे और इलम और हिक्मत और यक़ीन से दूर होंगे तब ख़ुदा उनको भी सहाबा के रंग लाएगा ।

अर्थात जो कुछ सहाबा ने देखा वह उनको भी दिखाया जाएगा यहां तक कि उनका सिदक़ और यक़ीन भी सहाबा के सिदक़ और यक़ीन की भांति हो जाएगा और हदीस सही में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस आयत की तफ़सीर के वक़्त सलमान फ़ारसी के कांधे पर हाथ रखा और फ़रमाया। لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ مُعَلَّقًا بِالثُّرَيَّا لَنَالَهُ رَجُلٌ مِّنْ فَارِسَ अर्थात अगर ईमान सुरय्या पर यानी आसमान पर भी उठ गया होगा तब भी एक आदमी फ़ारसी उल असल उस को वापस लाएगा। यह इस बात की तरफ़ इशारा फ़रमाया कि एक शख़्स आख़िरी ज़माना में फ़ारसीउल असल पैदा होगा, इस ज़माना में जिसकी निसबत लिखा गया है कि क़ुरआन आसमान पर उठाया जाएगा। यही वह ज़माना है जो मसीह मौऊद का है।" जब ईमान उठ गया। क़ुरआन आसमान पर उठ गया मतलब यह कि उस पर अमल ख़त्म हो गया तो यही ज़माना मसीह मौऊद की आमद का ज़माना है " और यह फ़ारसीउल असल वही है जिसका नाम मसीह मौऊद है क्योंकि सलीबी हमला जिसके तोड़ने के लिए मसीह मौऊद को आना चाहीए वह हमला ईमान पर ही है और यह समस्त आसार सलीबी हमला के ज़माना के लिए वर्णन किए गए हैं और लिखा है कि इस हमला का लोगों के ईमान पर बहुत बुरा असर होगा। वही हमला है जिसको दूसरे लफ़्ज़ों में दज्जाली हमला कहते हैं। आसार में है कि इस दज्जाल के हमला के वक़्त बहुत से नादान ख़ुदाए वाहिद लाशरीक को छोड़ देंगे और बहुत से लोगों की ईमानी मुहब्बत ठंडी हो जाएगी और मसीह मौऊद का बड़ा भारी काम तजदीद-ए-ईमान होगा क्योंकि हमला ईमान पर है और हदीस لَوْ كَانَ الْاِيْمَانُ से जोशख़्स फ़ारसी अलासल की निसबत है यह साबित है कि वह फ़ारसी उल-ईमान को दुबारा क़ायम करने के लिए आएगा। अतः

जिस हालत में मसीह मौऊद और फ़ारसी उल् असल का ज़माना भी एक ही है और काम भी एक ही है अर्थात ईमान को दुबारा क़ायम करना इस लिए यक़ीनी तौर पर साबित हुआ कि मसीह मौऊद ही फ़ारसीउल असल है और इसी की जमाअत के हक़ में यह आयत है وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ

इस आयत के माने ये हैं कि कमाल ज़लालत के बाद हिदायत और हिक्मत पाने वाले और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार और बरकात को मुशाहिदा करने वाले सिर्फ दो ही गिरोह हैं अव्वल सहाब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़हूर से पहले सख़्त तारीकी में ग्रस्त थे और फिर बाद इस के ख़ुदा तआला के फ़ज़ल से उन्होंने ज़माना नब्वी पाया और चमत्कार अपनी आँखों से देखे और भविष्यवाणियों का मुशाहिदा किया और यक़ीन ने उनमें एक ऐसी तबदीली पैदा की कि गोया सिर्फ एक रूह रह गए।

दूसरा गिरोह जो बमूजब आयत मौसूफ़ा बाला सहाबा की मानिंद हैं मसीह मौऊद का गिरोह है। क्योंकि यह गिरोह भी सहाबा की मानिंद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार को देखने वाला है और तारीकी और ज़लालत के बाद हिदायत पाने वाला और आयत اٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ में जो इस गिरोह को مِنْهُمْ की दौलत से यानी सहाबा से मुशाबेह होने की नेअमत से हिस्सा दिया है।

यह इसी बात की तरफ़ इशारा है अर्थात जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार देखे और भविष्यवाणियाँ मुशाहिदा कीं ऐसा ही वह भी मुशाहिदा करेंगे और दरमयानी ज़माना को इस नेअमत से कामिल तौर पर हिस्सा नहीं होगा। इसलिए आजकल ऐसा ही हुआ कि तेराह सौ बरस बाद फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार का दरवाज़ा खुल गया और लोगों ने अपनी आँखों से मुशाहिदा किया कि चंद्रग्रहण सूर्य ग्रहण रमज़ान में मुवाफ़िक़ हदीस दादारुल क़ुतनी और फतावा इब्ने हिज्र के ज़हूर में आ गया यानी चंद्रग्रहण और सूर्य ग्रहण रमज़ान में हुआ। और जैसा कि मज़मून हदीस था। इसी तरह पर चंद्रग्रहण अपने ग्रहण की रातों में से पहली रात में और सूर्य ग्रहण अपने ग्रहण के दिनों में से बीच के दिन में वक़ूअ में आया। ऐसे वक़्त में कि जब महदी होने का मुद्दई मौजूद था और यह सूरत जब से कि ज़मीन और आसमान पैदा हुआ कभी वक़ूअ में नहीं आई क्योंकि अब तक कोई शख़्स नज़ीर उसकी सफ़ा-ए-तारीख़ में साबित नहीं कर सका।" कोई साबित नहीं कर सकता तारीख़ से कि कभी ऐसा हुआ हो। "अतः यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का एक मोजिज़ा था जो लोगों ने आँखों से देख लिया। जिसका निकलना महदी और मसीह मौऊद के वक़्त में वर्णन किया गया था। हज़ारों इन्सानों ने निकलता हुआ देख लिया।' दमदार सितारा। "ऐसा ही जावा की आग भी लाखों इन्सानों ने मुशाहिदा की। ऐसा ही ताऊन का फैलना और हज से रोके जाना भी सबने स्वयं मुलाहिज़ा कर लिया। मुल्क में रेल का तैयार होना, ऊंटों का बेकार होना, ये तमाम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चमत्कार थे जो इस ज़माना में इसी तरह देखे गए जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने चमत्कार को देखा था। इसी वजह से अल्लाह ने इस आख़िरी गिरोह को मिन के शब्द से पुकाराता यह इशारा करे कि मुआइना चमत्कार में वह भी सहाबा के रंग में ही हैं। सोच कर देखो कि तेराह सौ बरस में ऐसा ज़माना मिन्हाज-ए-नबुव्वत का और किस ने पाया। इस ज़माना में जिसमें हमारी जमाअत पैदा की गई है कई वजूह से इस जमाअत को सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु से मुशाबहत है। वह चमत्कार और निशानों को देखते हैं।' आज भी देखते हैं। "जैसा कि सहाबा ने देखा। वह ख़ुदा तआला के निशानों और ताज़ा बताज़ा सहायता से नूर और यक़ीन पाते हैं जैसा कि सहाबा ने पाया। वह ख़ुदा की राह में लोगों के ठट्ठे और हंसी और लॉन तान और तरह तरह की दिला ज़ारी और बदज़बानी और क़ता रहम इत्यादि का सदमा उठा रहे हैं जैसा कि सहाबा ने उठाया।" आज भी यही हालत है। "वह ख़ुदा के खुले खुले निशानों और आसमानी मुददों और हिक्मत की तालीम से पाक ज़िंदगी हासिल करते जाते हैं जैसा कि सहाबा ने हासिल की।" बेशुमार मिसालें हैं इस की। "बहतेरे उनमें से हैं कि नमाज़ में रोते और सजदा गाहों को आँसूओं से तर करते हैं जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु रोते थे। बहतेरे उनमें से ऐसे हैं जिनको सच्ची ख़्वाबें आती हैं और इल्हाम-ए-इलाही से मुशर्रफ़ होते हैं जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु होते थे। बहुत से उनमें ऐसे हैं कि अपने मेहनत से कमाए हुए मालों को महिज़ ख़ुदा तआला की प्रसन्नता के लिए हमारे सिलसिला में ख़र्च करते हैं जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ख़र्च करते थे। उनमें ऐसे लोग कई पाओगे कि जो मौत को याद रखते और दिलों के नरम और सच्ची तक़्वा पर क़दम मार रहे हैं जैसा कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की सीरत थी। वह ख़ुदा का गिरोह है जिनको ख़ुदा आप सँभाल रहा है और दिन-ब-दिन

उनके दिलों को पाक कर रहा है और उनके सीनों को ईमानी हिक्मतों से भर रहा है और आसमानी निशानों से उनको अपनी तरफ़ खींच रहा है। जैसा कि सहाबा को खींचता था। उद्देश्य इस जमाअत में वह सारी अलामतें पाई जाती हैं जो अआख़रीन के लफ़्ज़ से मफ़्हूम हो रही हैं। और ज़रूरी था कि ख़ुदा तआला का फ़र्मूदा एक दिन पूरा होता। !!!"

फ़रमाया : "और आयत وَاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ में यह भी इशारा है कि जैसा कि यह जमाअत मसीह मौऊद की सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु की जमाअत से मुशाबेह है ऐसा ही जो शख़्स इस जमाअत का इमाम है वह भी ज़िल्ली तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुशाबहत रखता है जैसा कि ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मह्दी मौऊद की सिफ़त फ़रमाई कि वह आपसे होगा।

और दो मुशाबहत उसके वजूद में होंगी। एक मुशाबहत हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से जिसकी वजह से वह मसीह कहलाएगा और दूसरी मुशाबहत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से जिसकी वजह से वह मह्दी कहलाएगा। ईसी राज़ की तरफ़ इशारा करने के लिए लिखा है कि एक हिस्सा उसके बदन का इसराईली वज़ा और रंग पर होगा और दूसरा हिस्सा अरबी वज़ा और रंग पर। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम ऐसे वक़्त में आए थे जबकि मिल्लत-ए-मूसवी यूनानी हुकमा के हमलों से ख़तरनाक हालत में थी। और तालीम तौरेत और इस की भविष्यवाणियों और चमत्कार पर सख़्त हमला किया जाता था और यूनानी ख़्यालात के मुवाफ़िक़ ख़ुदा तआला के वजूद को भी एक ऐसा वजूद समझा गया था कि जो सिर्फ़ मख़लूक़ में मख़लूत है और मुदब्बिर बिल् ईरादा नहीं।" यानी आम मख़लूक़ की तरह ही है और तमाम क़ुदरतों का मालिक नहीं है। ऐसा नहीं कि जो चाहे कर सके। "और सिलसिला नबुव्वत से ठट्ठा किया जाता था। इस लिए हज़रत-ए-ईसा के अवतरित करने से जो हज़रत-ए-मूसा से चौदह सौ बरस बाद आए ख़ुदा तआला का यह इरादा था कि मूसवी नबुव्वत की सेहत और इस सिलसिला की हक़्क़ानियत पर ताज़ा शहादत क़ायम करे और नई सहायता और आसमानी गवाहों से मूसवी इमारत की दुबारा मुरम्मत कर देवे। इसी तरह जो इस उम्मत के लिए मसीह मौऊद भी चौधवीं सदी के सिर पर भेजा गया उसकी आमद से भी यही मतलब था कि जो यूरोप के फ़लसफ़ा और यूरोप की दज्जालियत ने इस्लाम पर तरह तरह के हमले किए हैं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और भविष्यवाणियों और चमत्कार से इंकार और क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर एतराज़ और बरकात और अनवार-ए-इस्लाम को सख़्त इस्तहज़ा की नज़र से देखा है इन तमाम हमलों को नीस्त-ओ-नाबूद करे और नबुव्वत-ए-मुहम्मदिया علیٰ صاحبہا الف الفِ سلام "हज़ार हज़ार सलाम हों"को ताज़ा तसदीक़ और ताईद से हक़ के तालिबों पर चमका और यही रहस्य है जो बराहीन-ए-अहमदिया .. में आज से सतरह बरस पहले एक इलहाम इसी बारे में हुआ। वह इलहाम ख़ुदा तआला का लाखों इन्सानों में शाय हो चुका है और वह यह है :

"بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد۔

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस का वज़ाहत के साथ ख़ुद जो अनुवाद फ़रमाया है वह यह है कि "अब ज़हूर कर और निकल कि तेरा वक़्त नज़दीक आ गया और अब वह वक़्त आ रहा है कि मुहम्मदी गढ़े में से निकाल लिए जावेंगे।" मुहम्मदी गढ़े में से निकाले जावेंगे अर्थात मुस्लमान "और एक बुलंद और मज़बूत मीनार पर उनका क़दम पड़ेगा।" (तर्जुमा इल्हाम अज़ नुज़ूलुल मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 प्रष्ठ 511)

फिर फ़रमाया कि "पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। ख़ुदा तेरे सब काम दुरुस्त करेगा और तेरी सारी मुरादें तुझे देगा। ख़ुदा की फ़ौजें इस तरफ़ तवज्जा करेगा। इस निशान का मुद्दा यह है कि क़ुरआन शरीफ़ ख़ुदा की किताब और मेरे मुँह की बातें हैं। ..और ख़ूब ग़ौर करो कि मेरे निशानों से क्या मुद्दा ठहराया गया" (ये अल्लाह तआला आप को अल्हामन फ़र्मा रहा है)। फ़रमाते हैं कि "अभी मैं वर्णन कर चुका हूँ कि इसी मतलब के लिए हज़रत-ए-ईसा अलैहिस्सलाम आए थे ता तक़्ज़ीब की हालत में नए निशानों के साथ तौरेत की तसदीक़ करें। और इसी मतलब के लिए ख़ुदा तआला ने मुझे भेजा है ता नए निशानों के साथ क़ुरआन-ए-शरीफ़ की सच्चाई ग़ाफ़िल लोगों पर ज़ाहिर की जाए। ईसी की तरफ़ इल्हाम-ए-इलाही में इशारा है कि पाए मुहम्मदियाँ बर मिनार बलंद तर मुहकम उफ़्ताद। और यही इशारा इस दूसरे इलहाम बराहीन अहमदिया में है। اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ۔ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ۔ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ۔ قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ۔"

अर्थात ख़ुदाए रहमान ने तुझे क़ुरआन सिखलाया ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप दादा डराए नहीं गए और ताकि मुजरिमों की राह खुल जाए। मुजरिमों की राह खुल जाए का मतलब मुजरिमों पर ख़ुदा की हुज्जत पूरी हो जाए। फ़रमाया कह मैं ख़ुदा की तरफ़ से मामूर हूँ और मैं सबसे पहले ईमान लाने वाला हूँ।

फ़रमाते हैं "अगर कोई कहे कि "हज़रत-ए-ईसा नबी उल्लाह हो कर तौरेत की तसदीक़ के लिए आए। अतः उनके मुक़ाबिल पर तुम्हारी गवाही क्या क़दर रखती है।" वह तो नबी अल्लाह थे। अल्लाह तआला ने नबी बना के भेजाथा तौरेत की तसदीक़ के लिए आए थे तुम किस तरह, किस हैसियत से क़ुरआन की गवाही के लिए आए हो। फ़रमाया "उस जगह भी तसदीक़ जदीद के लिए कोई नबी ही चाहीए था।" लोग कहते हैं यह कि गवाही क्या तक़ाज़ा रखती है इस जगह भी तसदीक़-ए-जदीद के लिए कोई नबी ही चाहिए था। ये लोग कहते हैं। "अतः उस का जवाब यह है कि इस्लाम में इस नबुव्वत का दरवाज़ा तो बंद है जो अपना सिक्का जमाअती हो।" यानी आज़ाद और शरीयत के साथ आने वाली नबुव्वत।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:"अल्लाह तआला फ़रमाता है وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ (अल्अहज़ाब : 41) और हदीस में है कि لَا نَبِيَّ بَعْدِيْ और जबकि हम हज़रत मसीह की वफ़ात स्पष्ट प्रमाणों से साबित हो चुकी इस लिए दुनिया में उनके दुबारा आने की उम्मीद ख़तम हो चुकी है।"क़ुरआन भी कहता है, हदीस भी कहती है और यह भी साबित हो गया है कि मसीह की वफ़ात हो गई है इसलिए यह तो बिलकुल ग़लत उम्मीद है कि कोई मसीह दुबारा आएगा। फ़रमाते हैं "और अगर कोई और नबी नया या पुराना आवे तो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्योंकर ख़ातम नबिय्यीन रहें।" अर्थात आपकी ख़त्म नबुव्वत से बाहर निकल कर आए। "हाँ वह्यी वलाएत और मुकालमात-ए-इलाही का दरवाज़ा बंद नहीं है जिस हालत में मतलब केवल यह है कि नए निशानों के साथ दीन-ए-हक की तसदीक की जाए।

दीन-ए-हक़ की तसदीक़ की जाए और सच्चे दीन की शहादत दी जाए तो जो निशान ख़ुदा तआला के निशान हैं ख़ाह वह नबी के ज़रीया से ज़ाहिर हूँ और ख़ाह वली के ज़रीया से वे सब एक दर्जा के हैं क्योंकि भेजने वाला एक ही है।

ऐसा ख़्याल करना सरासर जहालत और बेवक़ूफ़ी है कि अगर ख़ुदा तआला नबी के हाथ से और नबी के ज़रीया से कोई अकाशिय सहायता करे तो वह क़ुव्वत और शौकत में ज़्यादा है। और अगर वली की मार्फ़त वह ताईद हो तो वह क़ुव्वत और शौकत में कम है बल्कि कुछ निशान तो ताईद-ए-इस्लाम के ऐसे ज़ाहिर होते हैं कि इस वक़्त न कोई नबी होता है और न वली जैसा कि अस्हाबुल फ़ील के हलाक करने का निशान ज़ाहिर हुआ।" फ़रमाया" यह तो मुस्लिम है।" यह इस बात का जवाब है कि तुम कहते हो नबी नहीं है तो इसलिए हो नहीं सकता। नबी न भी हो तो वली के ज़रीया भी हो सकता है उतना तस्लीम करो और वली भी न हो तब भी अल्लाह तआला निशान दिखाता है जिस तरह असहाब-ए-फ़ील को निशान दिखाया। फ़रमाया "यह तो मुस्लिम है कि वली की करामत नबी मतबू का मोजिज़ा है।" जिस नबी का वह अनुसरण कर रहा है उसी का मोजिज़ा है "फिर जबकि करामत भी मोजिज़ा हुई तो चमत्कार में तफ़रीक़ करना ईमानदारों का काम नहीं। इस के अतिरिक्त हदीस-ए-सही से साबित है कि मुहद्दस भी नबियों और रसूलों की तरह ख़ुदा के मुर्सलों में दाख़िल है।" इस के इलावा यह भी दलील है कि मुहद्दिस भी नबियों और रसूलों में शामिल है। "बुख़ारी में وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ وَّلَا نَبِيٍّ وَّلَا مُحَدَّثٍ की करायत ग़ौर से पढ़ो। और तथा एक दूसरी हदीस में है कि عُلَمَآءُ اُمَّتِيْ كَاَنْبِيَآءِ بَنِيْٓ اِسْرَآئِيْلَ۔ फ़रमाते हैं कि "सोफ़िया ने अपने मुकाशफ़ात से भी इस हदीस की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से तसहीह की है। "यानी आप से उसकी तसदीक़ हासिल की है। "यह भी याद रहे कि मुस्लिम में मसीह मौऊद के हक़ में नबी का शब्द भी आया है।" कहते हो वह नबी नहीं तो यह भी याद रखो। एक तो पहले कि वली की दलील दी। दूसरी यह कि मसीह मौऊद के हक़ में नबी का लफ़्ज़ हदीस में आया है। "यानी बतौर मजाज़ और इस्तिआरा के। ईसी वजह से बराहीन-ए--अहमदिया में भी ऐसे शब्दों में ख़ुदा तआला की तरफ़ से मेरे हक़ में हैं यह इलहाम है هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى इस जगह रसूल से मुराद यह विनीत है' यानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम। "और फिर देखो बराहीन अहमदिया में यह इल्हाम

جَرِيُّ اللّٰهِ فِيْ حُلَلِ الْاَنْبِيَآءِ

जिसका अनुवाद है ख़ुदा का रसूल नबियों के लिबास में।' तुम कहते हो नबी नहीं। यह तो हदीस में भी आ रहा है। मुझे भी अल्लाह तआला बता रहा है कि मैं नबी हूँ "इस इल्हाम में मेरा नाम रसूल भी रखा गया और नबी भी"

अतः जिस शख़्स के ख़ुद ख़ुदा ने यह नाम रखे हूँ उस को अवाम में से समझना

कमाल दर्जा की शोख़ी है और ख़ुदा के निशानों की शहादतें किसी तरह कमज़ोर नहीं हो सकतीं। ख़ाह नबी के ज़रीया से हों या मुहद्दिस के ज़रीया से। असल तो यह है कि ख़ुद हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नबुव्वत और आपका फ़ैज़ एक मज़हर पैदा करके अपनी गवाही आप दिलाता है और वली को मुफ़्त का नाम हासिल होता है।" असल तो जो निशानात ज़ाहिर हो रहे हैं वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सच्चाई के ज़ाहिर हो रहे हैं। वली का नाम या जिसका भी नाम बीच में आया जिसके ज़रीया से हो रहे हैं इस का नाम मुफ़्त में आ रहा है। फ़रमाया "सौ दरहक़ीक़त वली जो مُصَدِّق है वह आपसे ज़ीनत पाता है आप उस से ज़ीनत नहीं पाते।"

(अय्याम-ए- सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 14 पृष्ठ 304 से 310)

अपने दावा के मुताल्लिक़ आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

कि "जब ख़ुदा तआला ने ज़माना की मौजूदा हालत को देख कर और ज़मीन को तरह तरह के फ़िस्क़ और मासियत और गुमराही से भरा हुआ पा कर मुझे तब्लीग़-ए-हक़ और इस्लाह के लिए मामूर फ़रमाया और यह ज़माना भी ऐसा था कि .. इस दुनिया के लोग तेरहवीं सदी हिज्री को ख़त्म करके चौधवीं सदी के सिर पर पहुंच गए थे तब मैं ने इस हुक्म की पाबंदी से आम लोगों में बज़रिया तहरीरी इश्तहारात और तक़रीरों के यह निदा करनी शुरू की कि

इस सदी के आरंभ पर जो ख़ुदा की तरफ़ से तजदीद दीन के लिए आने वाला था वह मैं ही हूँ ता वे ईमान जो ज़मीन पर से उठ गया है उस को दुबारा क़ायम करूँ और ख़ुदा से क़ुव्वत पा कर उसी के हाथ की कशिश से दुनिया को इस्लाह और तक़्वा और रास्तबाज़ी की तरफ़ खींचूँ। और उनकी एतेक़ादी और अमली ग़लतियों को दूर करूँ।

और फिर जब इस पर चंद वर्ष गुज़रे तो बज़रीया वह्यी इलाही मेरे पर बतसरेह खोला गया कि वह मसीह जो इस उम्मत के लिए इबतेदा से मौऊद था और वह आख़िरी मह्दी जो तनज़्ज़ुल-ए-इस्लाम के वक़्त और गुमराही के फैलने के ज़माना में बराह-ए-रस्त ख़ुदा से हिदायत पाने वाला और इस आसमानी मायदा को नए सिरे से इन्सानों के आगे पेश करने वाला तक़दीर-ए-इलाही में मुक़र्रर किया गया था जिसकी बशारत आज से तेराह सौ बरस पहले रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी वह मैं ही हूँ और मुकालमात-ए-इलाहिया और मुख़ातबात-ए-रहमान इस सफ़ाई और तवातर से इस बारे में हुए कि शक-ओ-शुबा की जगह न रही। हर एक वही जो होती थी एक फ़ौलादी मेख़ की तरह दिल में धँसती थी। और यह समस्त मुकालमात-ए-इलाही ऐसी अज़ीमुश्शान भविष्यवाणियों से भरे हुए थे कि रोज़-ए-रोशन की तरह वह पूरी थीं।"

(तज़करःतुस शहादतेन, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 3-4)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ऐसे वक़्त में और ऐसे ज़माना में जबकि ख़ुदा शनासी की रोशनी कम होते होते आख़िर हज़ारहा नफ़सानी ज़ुल्मतों के पर्दा में छिप जाती है बल्कि अक्सर लोग दहरिया के रंग में हो जाते हैं और ज़मीन गुनाह और ग़फ़लत और बेबाकी से भर जाती है ख़ुदा तआला की ग़ैरत और जलाल और इज़्ज़त तक़ाज़ा फ़रमाती है कि दुबारा अपने तईं लोगों पर फ़रमावे।

जैसा कि इस की क़दीम से सुन्नत है हमारे इस ज़माना में जो ऐसे ही हालात और अलामात अपने अंदर जमा रखता है ख़ुदा तआला ने मुझे चौधवीं सदी के आरंभ पर इस तजदीद-ए-ईमान और मार्फ़त के लिए मबऊस फ़रमाया है ।

और इस की ताईद और फ़ज़्ल से मेरे हाथ पर आसमानी निशान ज़ाहिर होते हैं और इस के इरादा और मस्लहत के मुवाफ़िक़ दुआएं क़बूल होती हैं और ग़ैब की बातें बतलाई जाती हैं और हक़ायक़ और मारुफ-ए-क़ुरआन वर्णन फ़रमाए जाते और शरीयत की मुश्किलात हल किए जाते हैं और मुझे इस ख़ुदाए करीम की क़सम है जो झूठ का दुश्मन और मुफ़्तरी को नेस्त-ओ-नाबूद करने वाला है कि मैं उस की तरफ़ से हूँ और इस के भेजने से ऐन वक़्त पर आया हूँ और इस के हुक्म से खड़ा हुआ हूँ और वह मेरे हर क़दम में मेरे साथ है और वह मुझे ज़ाए नहीं करेगा और न मेरी जमाअत को तबाही में डालेगा जब तक वह अपना समस्त काम पूरा न कर ले जिसका उसने इरादा फ़रमाया है। उसने मुझे चौधवीं सदी के आरंभ पर तकमील-ए-नूर के लिए मामूर फ़रमाया और उसने मेरी तसदीक़ के लिए रमज़ान में चंद्रग्रहण सूर्य ग्रहण किया और ज़मीन पर बहुत से खुले खुले निशान दिखलाय जो हक़ के तालिब के लिए काफ़ी थे और इस तरह उसने अपनी हुज्जत पूरी कर दी।"

(अरबईन नंबर : 2 रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 347-348)

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं ग़ैरों की तरफ़ से जो एतराज़ होता है कि यह सवाल करना उनका हक़ है कि हम क्योंकर यह दावा मसीह मौऊद होने का क़बूल कर लें। आप अलैहिस्सलाम का यह दावा है किस तरह क़बूल कर लें। फिर इस पर दलील क्या है कि वह मसीह मौऊद तुम ही हो? ठीक है ज़माना पहचान है, हालात भी ऐसे हैं सब कुछ है और निशानियां भी हैं लेकिन यह किस तरह पता लगेगा कि मसीह मौऊद तुम ही हो फ़रमाते हैं कि : इस का उत्तर यह है कि जिस ज़माने और जिस मुल्क और जिस क़स्बे में मसीह मौऊद ज़ाहिर होना क़ुरआन शरीफ़ और अहादीस से साबित होता है और जिन विशेष कार्यों को को मसीह के वजूद की इल्लत-ए-ग़ाई ठहराया गया है और जिन पृथ्वी और आकाश के कार्यों को मसीह मौऊद के ज़ाहिर होने की निशानात वर्णन फ़रमाया गया है और जिन उलूम और मआरिफ़ को मसीह मौऊद की विशेषता ठहराया गया है वे सब बातें अल्लाह तआला ने मुझ में और मेरे ज़माने में और मेरे मुल्क में जमा कर दी हैं।

हादेसात भी हो रहे हैं, बिमारीयां भी आ रही हैं, ज़लज़ल्ए भी आ रहे हैं, आसमानी निशानियां भी पूरी हो रही हैं, मेरा दावा भी मौजूद है और अल्लाह तआला मेरे हाथों से निशान भी दिखा रहा है तो फिर तुम किस तरह कहते हो कि मैं नहीं हूँ। यही तो दलील है। वे सब बातें अल्लाह तआला ने मुझ में और मेरे ज़माने में और मेरे मुल्क में जमा कर दी हैं और फिर ज़्यादा-तर इत्मेनान के लिए आसमानी सहायता मेरे शामिल-ए-हाल की हैं।

(माख़ूज़ अज़ किताबुल बरिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 13 पृष्ठ 254-255)

बक़ीया हाशिया और आसमानी सहायता में आप ने बताया कि दमदार सितारे, सूरज चंद्र ग्रहण, ताऊन का फैलना, ज़लज़ले आना बहुत सारे हैं।

सिल्सिला की प्रगति की समय से पूर्व सूचना और निशानात और सहायता को वर्णन करते हुए आप ने बहुत सारी बातें वर्णन फ़रमाई हैं। आप ने बड़ी कुतुब लिखी हैं इस बारे में जैसा कि पहले भी मैंने कहा था। एक दो बातें पेश करता हूँ।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक अज़ीमुश्शान निशान यह है कि आज से तेईस बरस पहले बराहीन-ए-अहमदिया में यह इलहाम मौजूद है कि लोग कोशिश करेंगे कि इस सिलसिला को मिटा दें।' आज तक कोशिश कर रहे हैं, एक सौ तीस, बत्तीस साल गुज़र गए। "और हर एक मकर काम में लाएँगे परंतु मैं इस सिलसिला को बढ़ाऊँगा' अल्लाह तआला कहता है "और कामिल करूँगा और वह एक फ़ौज हो जाएगी और क़ियामत तक उनका ग़लबा रहेगा और मैं तेरे नाम को दुनिया के किनारों तक शौहरत दूँगा और जौक़ दर जौक़ लोग दूर से आएँगे और हर एक तरफ़ से माली मदद आएगी। मकानों को बड़ा करो कि यह कार्य आसमान पर हो रहा है। अब देखो किस ज़माना की यह भविष्यवाणी है जो आज पूरी हुई। यह ख़ुदा के निशान हैं जो आँखों वाले उनको देख रहे हैं परंतु जो अंधे हैं उनके नज़दीक अभी तक कोई निशान ज़ाहिर नहीं हुआ।"

(नुज़ूलुल-मसीह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 18 पृष्ठ 384 – 385)

जैसा कि मैंने कहा उनकी बहुत तफ़सील है। चंद निशानात और यहां वर्णन कर देता हूँ।

इलमी निशानात और सहायता के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा एक हिंदु साहिब कादियान में मेरे पास आए जिनका नाम याद नहीं' फिर लिखा है कि "(याद आया उस का नाम स्वामी शगुन चन्द्र था।) रहा।और कहा कि मैं एक मज़हबी जलसा (इस जलसा का नाम धर्म महाउत्सव जलसा आज़म मज़ाहिब मशहूर किया गया था।) करना चाहता हूँ।' एक मज़हबी जलसा करना चाहता हूँ। "आप भी अपने मज़हब की ख़ूबियों के मुताल्लिक़ कुछ मज़मून लिखें ता इस जलसा में पढ़ा जाए। मैंने अज़्र किया पर उसने बहुत इसरार से कहा कि आप ज़रूर लिखें। चूँकि मैं जानता हूँ कि मैं अपनी ज़ाती ताक़त से कुछ भी नहीं कर सकता बल्कि मुझ में कोई ताक़त नहीं। मैं बग़ैर ख़ुदा के बुलाए बोल नहीं सकता और बग़ैर उस के दिखाने के कुछ देख नहीं सकता।

मैं ने जनाब-ए-इलाही में दुआ की कि वह मुझे ऐसे मज़मून का अलक़ा करे जो इस मजमा की तमाम तक़रीरों पर ग़ालिब रहे।

मैंने दुआ के बाद देखा कि एक क़ुव्वत मेरे अंदर फूंक दी गई है। मैंने इस आसमानी शक्ति की एक हरकत अपने अंदर महसूस की और मेरे दोस्त जो उस वक़्त हाज़िर थे जानते हैं कि मैंने इस मज़मून का कोई मुसव्वदा नहीं लिखा जो कुछ लिखा केवल क़लम से उसी समय लिखा था और ऐसी तेज़ी और जल्दी से मैं लिखता जाता था कि नक़ल करने वाले के लिए मुश्किल हो गया कि इस क़दर जल्दी से इस की नक़ल कैसे लिखे। जब मैं मज़मून ख़त्म कर चुका तो ख़ुदा तआला की तरफ़ से इल्हाम हुआ

कि मज़मून बाला रहा ख़ुलासा कलाम यह कि जब वह मज़मून उस मजमा में पढ़ा गया तो उसके पढ़ने के वक़्त पाठको के लिए एक आलम-ए-वज्द था' एक वज्द की कैफ़ीयत तारी थी" और हर एक तरफ़ से तहसीन की आवाज़ थी यहां तक कि एक हिंदु साहिब जो सदर नशीन इस मजमा के थे।' जिनकी सदारत में यह जलसा हो रहा

था। "उनके मुँह से भी बे-इख़्तियार निकल गया कि यह मज़मून तमाम मज़ामीन से बाला रहा। और सिवल ऐंड मिल्ट्री गज़्ट जो लाहौर से अंग्रेज़ी में एक अख़बार निकलता है उसने भी शहादत के तौर पर शाय किया कि यह मज़मून बाला रहा। और शायद बीस के क़रीब ऐसे उर्दु अख़बार भी होंगे जिन्हों ने यही शहादत दी और इस मजमा में सिवाए कुछ द्वेष रखने वाले लोगों के तमाम ज़बानों पर यही था कि यही मज़मून फ़त्हयाब हुआ और आज तक सदहा आदमी ऐसे मौजूद हैं जो यही गवाही दे रहे हैं।" बल्कि आज भी इस ज़माने में भी इस को पढ़ कर लोग अहमदियत क़बूल कर रहे हैं। जो इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी थी। "ग़रज़ हर एक फ़िर्क़ा की शहादत और तथा अंग्रेज़ी अख़बारों की शहादत से मेरी भविष्यवाणी पूरी हो गई कि मज़मून बाला रहा। यह मुक़ाबला इस मुक़ाबला की मानिंद था जो मूसा नबी को साहिरों के साथ करना पड़ा था क्योंकि इस मजमा में मुख़्तलिफ़ ख़्यालात के आदमियों ने अपने अपने मज़हब के मुताल्लिक़ तक़रीरें सुनाई थीं जिनमें से कुछ ईसाई थे और कुछ सनातन धर्म के हिंदू और कुछ आर्या समाज के हिंदू और कुछ ब्रहमो और कुछ सिख और कुछ हमारे मुख़ालिफ़ मुस्लमान थे और सबने अपनी अपनी लाठियों के ख़्याली साँप बनाए थे लेकिन जबकि ख़ुदा ने मेरे हाथ से इस्लामी रास्ती का सोटा एक पाक और पर मआरिफ़ तक़रीर के पैराया में उनके मुक़ाबिल पर छोड़ा तो वह अज़दहा बन कर सबको निगल गया और आज तक क़ौम में मेरी इस तक़रीर का तारीफ़ के रंग में चर्चा है

जो मेरे मुँह से निकली थी। فَالْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى ذَالِكَ।"

(हकीकतुल वह्यी,रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 291-292 हाशिया)

"फिर एक और भविष्यवाणी का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं। यह "निशान-ए--इलाही है जिसका वर्णन बराहीन अहमदिया .. में है और वह यह है कि يَا أَحْمَدُ فَاضَتِ الرَّحْمَةُ عَلٰى شَفَتَيْكَ- हे अहमद फ़साहत बलाग़त के चश्मे तेरे लबों पर जारी किए गए। अतः उसकी तसदीक़ कई साल से हो रही है। कई किताबें अरबी बलीग़ फ़सीह में तालीफ़ कर के हज़ारहा रुपया के इनाम के साथ उल्मा इस्लाम और ईसाइयों के सामने पेश की गईं परंतु किसी ने सिर न उठाया और कोई मुक़ाबिल पर न आया। क्या यह ख़ुदा का निशान है या इन्सान का बनाया हुआ है।"(ज़मीमा रिसाला अं-जाम-ए-आथम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 11 पृष्ठ 290-291) बातें तो लोग करते हैं आज भी करते हैं लेकिन इस वक़्त तो कोई मुक़ाबले पर नहीं आया।

फिर दुआ की क़बूलीयत के निशान के तौर पर क़बूलीयत दुआ का एक वाक़िया वर्णन फ़रमाते हैं। बेशुमार वाक़ियात हैं। मैं यह एक पेश करता हूँ। फ़रमाया कि "निशान जो इन दिनों में ज़ाहिर हुआ वह एक दुआ का क़बूल होना है जो दर-हक़ी-क़त अहयाए मोती में दाख़िल है। तफ़सील इस अजमाल की यह है कि अब्दुल करीम नाम वलद अबदुर्रहिमान साकिन हैदराबाद दक्खिन हमारे मुदर्रिसा में एक लड़का तालिब-ए-इल्म है। संयोग से उस को पागल कुत्ते ने काट लिया।' पागल कुत्ते ने उस को काट लिया। "हमने उस को ईलाज के लिए कसौली भेज दिया। कुछ दिनों तक उस का कसौली में ईलाज होता रहा फिर वह कादियान वापिस आया। थोड़े दिन गुज़रने के बाद इस में वे आसार पागलपन के ज़ाहिर हुए।" पुनः ज़ाहिर हो गए "जो दीवाना कुत्ते के काटने के बाद ज़ाहिर हुआ करते हैं और पानी से डरने लगा और ख़ौफ़नाक हालत पैदा हो गई। तब इस ग़रीब-उल-वतन आजिज़ के लिए मेरा दिल सख़्त बेक़रार हुआ।' ग़रीब-उल-वतन है। बेचारा ग़रीब आदमी वतन से दूर है तो मेरा दिल बड़ा सख़्त बेचैन हुआ" और दुआ के लिए एक ख़ास तवज्जा पैदा हो गई। हर एक शख़्स समझता था कि वह ग़रीब चंद घंटा के बाद मर जाएगा। नाचार उस को बोर्डिंग से बाहर निकाल कर एक अलग मकान में दूसरों से अलैहदा हर एक एहतियात से रखा गया और कसौली के अंग्रेज़ डाक्टरों की तरफ़ तार भेज दी और पूछा गया कि इस हालत में इस का कोई ईलाज भी है। इस तरफ़ से बज़रीया तार जवाब आया कि अब उस का कोई ईलाज नहीं परंतु इस ग़रीब और बेवतन लड़के के लिए मेरे दिल में बहुत तवज्जा पैदा हो गई और मेरे दोस्तों ने भी इस के लिए दुआ करने के लिए बहुत ही इसरार किया क्योंकि इस गुर्बत की हालत में वह लड़का का-बिल-ए-रहम था और तथा दिल में यह ख़ौफ़ पैदा हुआ कि अगर वह मर गया तो एक बुरे रंग में इस की मौत दुश्मनों की खुशी का मूजिब होगी।" दुश्मन जो है वह, विरोधी जो हैं वे शोर मचाएँगे कि क़बूलीयत दुआ के बड़े दावे करते हैं। "तब मेरा दिल उसके लिए सख़्त दर्द और बेकरारी में मुबतला हुआ और ख़ारिक़ आदत तवज्जा पैदा हुई जो अपने इख़्तेयार से पैदा नहीं होती बल्कि महिज़ ख़ुदा तआला की तरफ़ से पैदा होती है और अगर पैदा हो जाए।" ऐसी हालत दुआ की कैफ़ीयत "तो ख़ुदा तआला के इज़्न से वे असर दिखाती है कि क़रीब है कि इस से मुर्दा जीवित हो जाए।"इतना असर होता है इस का। "ग़रज़ उस के लिए इक़बाल अल्लाह की हालत मयस्सर आ गई और जब वह तवज्जा इंतेहा तक पहुंच गई और दर्द ने अपना पूरा तसल्लुत मेरे दिल पर कर लिया।" दुआ की ऐसी कैफ़ीयत हो गई, दिल दर्द से भर गया "तब इस बीमार पर जो दरहक़ीक़त मुर्दा था इस तवज्जा के आसार ज़ाहिर होने शुरू हो गए और या तो वह पानी से डरता और रोशनी से भागता था और या यकदफ़ा तबीयत ने सेहत की तरफ़ रुख किया और उसने कहा कि अब मुझे पानी से डर नहीं आता। तब उस को पानी दिया गया तो उसने बग़ैर किसी ख़ौफ़ के पी लिया बल्कि पानी से वुज़ू करके नमाज़ भी पढ़ ली और तमाम रात सोता रहा और ख़ौफ़नाक और वहशयाना हालत जाती रही यहां तक कि चंद रोज़ तक पूर्णतः सेहत याब हो गया।" फ़रमाते हैं कि "मेरे दिल में फ़ील-फ़ौर डाला गया कि यह दीवानगी की हालत जो इस में पैदा हो गई थी यह इस लिए नहीं थी कि वह दीवानगी उस को हलाक करे बल्कि इस लिए थी किता ख़ुदा का निशान ज़ाहिर हो। और तजरबाकार लोग कहते हैं कि कभी दुनिया में ऐसा देखने में नहीं आया कि ऐसी हालत में कि जब किसी को दीवाना कुत्ते ने काटा हो और दीवानगी के आसार ज़ाहिर हो गए हूँ फिर कोई शख़्स इस हालत से बच सके और इस से ज़्यादा इस बात का और क्या सबूत हो सकता है कि जो माहिर इस फ़न के कसौली में गर्वनमैंट की तरफ़ से कुत्ते के काटे के ईलाज के लिए डाक्टर निर्धारित हैं उन्होंने हमारे तारके जवाब में साफ़ लिख दिया है कि अब कोई ईलाज नहीं हो सकता।"

(ततिम्मा हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 प्रष्ठ 480 से 481)

फिर डोई के निशान का वर्णन करते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "वह डाक्टर डोई जो अमरीका और यूरोप की निगाहों में बादशाहों की तरह अपनी शौकत और शान रखता था इस को ख़ुदा ने मेरे मुबाहला और मेरी दुआ से हलाक किया और एक दुनिया को मेरी तरफ़ झुका दिया। और यह वाक़िया दुनिया के तमाम नामी अख़बारों में शौहरत पा कर एक आलमगीर शौहरत के रंग में हर वर्ग के लोगों में प्रसिद्ध हो गया।"

(ततिम्मा हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 553)

फिर एक और निशान के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी ने अपने तौर पर मुझसे मुबाहला किया और अपनी किताब में दुआ की कि जो काज़िब है ख़ुदा उसको हलाक करे।"एक तरफ़ा मुबाहला था।" फिर उस दुआ से चंद दिन बाद आप ही हलाक हो गया" वह मौलवी।" यह किस क़दर मुख़ालिफ़ मौलवियों के लिए निशान था अगर वह समझते।"

(हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 239)

फिर एक और निशान के बारे में आप अलैहिस्सलाम बताते हैं कि अल्लाह तआला की ताईद किस तरह आप के साथ है। फ़रमाते हैं कि "हर एक मुंसिफ़ मौलवी ग़ुलाम दस्तगीर क़सूरी की किताब को देखकर समझ सकता है कि किस तरह उसने अपने तौर पर मेरे साथ मुबाहला किया और अपनी किताब फ़ैज़-ए-रहमानी में इस को शाय कर दिया।" इसी मौलवी का वर्णन है जो पहले हो चुका है। "और अपनी किताब फ़ैज़-ए-रहमानी में इस को शाय कर दिया। और फिर उस मुबाहला से सिर्फ चंद रोज़ बाद फ़ौत हो गया और किस तरह चिरागुद्दीन जम्मू वाले ने अपने तौर से मुबाहला किया और लिखा कि हम दोनों में से झूठे को ख़ुदा हलाक करेगा और फिर इस से सिर्फ चंद दिनों बाद ताऊन से अपने दोनों लड़कों के साथ हलाक हो गया।"(हकीक-तुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 71 हाशिया) एक दूसरा मौलवी था जम्मूनी।

फिर आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "मेरे पर जो मेरी क़ौम तरह तरह के एतराज़ पेश करती है मुझे उनके एतराज़ों की कुछ भी पर्वा नहीं और सख़्त बेईमानी होगी अगर मैं उनसे डर कर सच्चाई की राह को छोड़ दूं और ख़ुद उनको सोचना चाहिए कि एक शख़्स को ख़ुदा ने अपनी तरफ़ से बसीरत इनायत फ़रमाई है और आप उस को राह दिखला दी है और इस को अपने मुकालमा और मुख़ातबा से मुशर्रफ़ फ़रमाया है और हज़ारहा निशान उस की तसदीक़ के लिए दिखलाय हैं क्योंकर एक मुख़ालिफ़ की धारणाओ को कुछ चीज़ समझ कर इस आफताब-ए-सदाक़त से मुँह फेर सकता है।" लोगों की बातों से मुतास्सिर हो के सच्चाई को तो नहीं छोड़ सकता। फ़रमाया "और मुझे इस बात की भी पर्वा नहीं कि अंदरूनी और बैरूनी मुख़ालिफ़ मेरी ऐब--जोई में मशग़ूल हैं क्योंकि इस से भी मेरी करामत ही साबित होती है।" अगर ऐब--जोई कर रहे हैं तो यह भी मेरी करामत साबित हो रही है। "वजह यह" किस तरह साबित हो रही है "कि अगर मैं हर किस्म का ऐब अपने अंदर रखता हूँ।" जो कहते हैं फ़ुलां फ़ुलां फ़ुलां ऐब है। अगर हर किस्म का ऐब में अपने अंदर रखता हूँ "और बाक़ौल इनके में अहद-शिकन और कज़्ज़ाब और दज्जाल और मुफ़्तरी और ख़ायन हूँ और हरामख़ोर हूँ और क़ौम में फूट डालने वाला और फ़िला अंगेज़ हूँ और फ़ासिक़ और फ़ाजिर हूँ और ख़ुदा पर क़रीबन तीस बरस से इफ़्तरा करने वाला हूँ और नेकों

और रास्तबाज़ों को गालियां देने वाला हूँ और मेरी रूह में बजुज़ शरारत और बदी और बदकारी और नफ़्सपरसती के और कुछ नहीं और महिज़ दुनिया के ठगने के लिए मैंने यह एक दूकान बनाई है और नऊज़बिल्लाह बाक़ौल उनके मेरा ख़ुदा पर भी ईमान नहीं और दुनिया का कोई ऐब नहीं जो मुझमें नहीं मगर बावजूद इन बातों के जो तमाम दुनिया के ऐब मुझमें मौजूद हैं और हर एक किस्म का ज़ुलम मेरे नफ़्स में भरा हुआ है और बहुतों के मैंने बेजा तौर पर माल खिलाए और बहुतों को मैंने ये लोग कहते हैं नाँ माल खा लिए बहुतों को मैंने (जो फ़रिश्तों की तरह पाक थे) गालियां दी हैं" पाक लोगों को मैंने गालियां दी हैं" और हर एक बदी और ठग बाज़ी में सबसे ज़्यादा हिस्सा लिया तो फिर इस में क्या भेद है कि बद और बदकार और ख़ायन और कज़्ज़ाब तो मैं था परंतु मेरे मुक़ाबिल पर हर एक फ़िरिश्ता सीरत जब आया तो वही मारा गया। जिसने मुबाहला किया वही तबाह हुआ। जिसने मेरे पर बददुआ की वह बददुआ उसी पर पड़ी। जिसने मेरे पर कोई मुक़द्दमा अदालत में दायर किया उसी ने शिकस्त खाई।" सब कुछ तो मैं हूँ, सारी बातें, बुराईयां मेरे अंदर हैं लेकिन मेरे मुक़ाबले पर जो भी आता है उस को अल्लाह तआला ख़त्म कर देता है और मुझे कामयाबी अता फ़रमाता है। अजीब किस्म के ये इल्ज़ामात मेरे पर हैं। फ़रमाते हैं 'इसलिए बतौर नमूना इसी किताब में" हकीकतुल वह्यी में यह आप अलैहिस्सलाम बयान फ़र्मा रहे हैं। "इन बातों का सबूत मुशाहिदा करओगे।' इस किताब में बहुत सारे नमूने आप ने दिए हुए हैं। अगर कोई पढ़े तो उस को बेशुमार बातें नज़र आयेंगी, निशानात नज़र आएँगे। फ़रमाया कि "चाहिए तो यह था कि ऐसे मुक़ाबला के वक़्त में ही हलाक होता। मेरे पर ही बिजली पड़ती।" उसूल तो यह होना चाहिए था कि मैं हलाक होता। अगर मेरे में सारी बुराईयां हैं तो मेरे पर बिजली पड़ती "बल्कि किसी के मुक़ाबिल पर खड़े होने की भी ज़रूरत न थी।" अगर मैं ऐसा था तो किसी को मेरे मुक़ाबले पर आने की ज़रूरत ही नहीं थी "क्योंकि मुजरिम का ख़ुद ख़ुदा दुश्मन है।"ऐसा जुर्म करने वाला हूँ मैं तो ख़ुदा तो मेरा दुश्मन ख़ुद ही हो जाता। अल्लाह तआला दुनिया में फ़साद तो नहीं चाहता। फ़रमाते हैं "अतः ख़ुदा के लिए सोचो कि यह उल्टा असर क्यों ज़ाहिर हुआ क्यों मेरे मुक़ाबिल पर नेक मारे गए' जो नाम निहाद नेक थे" और हर एक मुक़ाबला में ख़ुदा ने मुझे बचाया। क्या इस से मेरी करामत साबित नहीं होती? यह इल्ज़ाम जो तुम लगा रहे हो यह भी मेरी करामत है और इस से भी मेरी सच्चाई साबित होती है। "अतः यह शुक्र का मुक़ाम है कि जो बदियाँ मेरी तरफ़ मंसूब की जाती हैं वह भी मेरी करामत ही साबित करती हैं।" (हकीकतुल वह्यी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 22 पृष्ठ 2)

बहरहाल यह चंद मिसालें और बातें मैं ने आप अलैहिस्सलाम के हवालों से मुख़्तसर वर्णन की हैं। काश कि मुख़ाल्एफ़ीन आप की कुतुब पढ़ें। आप के साथ ख़ुदा तआला की सहायता और निशानात को देखें जो सफ़हात पर नहीं जैसा कि मैंने कहा कई किताबों पर मुश्तमिल हैं। ज़माने की ज़रूरत को भी देखें बल्कि ज़माने की ज़रूरत के मुताबिक़ ख़ुद यह एतराज़ करने वाले उल्मा भी इस बात का एतराफ़ करते हैं कि यह ज़माना किसी मुस्लेह और मह्दी को चाहता है लेकिन फिर भी जो ख़ुदा तआला की तरफ़ से भेजा गया है इस का ख़ुद भी इंकार कर रहे हैं और आम मुसलमानों को भी गुमराह कर रहे हैं। आसमानी निशानियां पूरी हुईं, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियाँ पूरी हुईं, लेकिन फिर भी यह अपनी बदक़िस्मती को ही आवाज़ दे रहे हैं। इस तरफ़ देखते।

आज मुस्लमान अगर इस हक़ीक़त को समझ लें कि जो मसीह व महदी आने वाला था वह आ गया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हक़ीक़ी आशिक़ और गुलाम-ए-सादिक़ भी यही है और इस की बैअत में आना आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म के बमूजब ज़रूरी है और कामिल वफ़ा के साथ उसकी बैअत में शामिल हो जाएं तो मुस्लमान उनको मानने के बाद दुनिया में अपनी बरतरी मनवा सकते हैं और अल्लाह तआला के फ़ज़्लों को जज़्ब करने वाले बन सकते हैं अन्यथा यही उनका हाल रहना है जो हो रहा है। अल्लाह तआला उनको अक़्ल और समझ दे।

रमज़ान के महीने में अहमदी जहां अपने लिए दुआ करें और जमाअत के हर किस्म के फ़ित्ने से बचने के लिए भी दुआ करें वहां मुस्लिम उम्मा के लिए भी दुआ करें अल्लाह तआला उनकी आँखें खोले और अंधेरों से उन्हें निकाले और उन्हें इस बात का इदराक अता फ़रमाए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मुक़ाम ख़त्म-ए-नबुव्वत को हक़ीक़ी तौर पर जानने वाले हूँ। इस बात का इदराक उनको हासिल हो जाए कि मुक़ाम ख़त्म नबुव्वत को हक़ीक़ी तौर पर जानने वाले हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी मसीह मौऊद और मह्दी माहूद ही हैं और आप अलैहिस्सलाम की जमाअत है।

पाकिस्तान के अहमदियों को खासतौर पर अपने मुल्क के लिए भी दुआ करनी चाहिए। पाकिस्तानी अहमदियों के लिए दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला फ़ित्ना प्रदाज़ों और उपद्रवों और ख़ुद-ग़रज़ अनासिर और लीडरों से देश को बचाए।

इसी तरह बुर्कीना फासो के अहमदियों के लिए दुआ करें। अल्लाह तआला उन्हें हर शर से महफ़ूज़ रखे। बंगलादेश के अहमदियों को खासतौर पर दुआओं में याद रखें। वहां भी हर जुमे कोई न कोई ख़तरा रहता है

दुनिया-ए-अहमदियत के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला हर उपद्रव से हर अहमदी को महफ़ूज़ रखे और हर अहमदी को साबित क़दम अता फ़रमाए और ईमान और यक़ीन में बढ़ाए। दुनिया के तबाही से बचने के लिए भी दुआ करें।

आजकल जो हालात हैं कि दुनिया आग के दहाने पर खड़ी है। ज़ाहिरी जंगों की तरफ़ भी बढ़ रही है इस की वजह से भी तबाही आनी है और अख़लाक़ी बुराईयां भी जो इंतिहा को पहुंच चुकी हैं और अल्लाह तआला को जिस तरह ये लोग छोड़ रहे हैं अल्लाह तआला के ग़ज़ब को भड़काने वाले न ये बन जाएं और इस की वजह से फिर अल्लाह तआला का अज़ाब न उन पर हो।

अल्लाह तआला अहमदियों को हर उपद्रव से बचाए। अहमदियों को अपना फ़र्ज़ और हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और हर किस्म की आफ़ात से बचाते हुए अपनी हिफ़ाज़त और पनाह में ले-ले।

एक यह भी ऐलान कर दो कि कल तेईस मार्च से अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल जो हफ़्ता-वार बल्कि हफ़्ता में दो दफ़ा शुरू हो गया था अब वह रोज़नामा अल्फ़ज़ल की सूरत इख़्तेयार कर गया है इसलिए ज़्यादा से ज़्यादा उर्दू जानने वालों, पढ़ने वालों को इस को पढ़ना भी चाहिए, ख़रीदना भी चाहिए, सबस्क्राइब करना चाहिए।

अल्लाह तआला इस से फ़ैज़ उठाने की सबको तौफ़ीक़ दे और अल्फ़ज़ल में लिखने वालों को भी तौफ़ीक़ दे कि वे आला मज़ामीन लिखने वाले हों।

★ ★ ★

## अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार “अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमआत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-करीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुतबात जुमा और खिताबात, अध्यात्म्पूर्ण संदेश, ख़ुतबा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इलम के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर अमल करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की तालीम-और-तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी तालीम-ओ-तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इस का सम्मान किया जाए। इस लिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे।

(संस्थान)

★ ★ ★

# ख़ुत्बः जुमअः

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन नबिय्यीन हैं और क़ुरआन-ए-करीम ख़ातमुल् क़ुतुब अब कोई और कलिमा या कोई और नमाज़ नहीं हो सकती। जो कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया करके दिखाया और जो कुछ क़ुरआन शरीफ़ में है इस को छोड़कर निजात नहीं मिल सकती। जो इस को छोड़ेगा वह जहन्नुम में जावेगा। यह हमारा धर्म और है।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"धर्म का यह इख़्तेयार नहीं है कि किसी फ़ितरती क़ुव्वत को बदल डाले। हाँ यह इख़्तेयार है कि इसको अवसर पर प्रयोग करने के लिए हिदायत करे और सिर्फ एक क़ुव्वत उदाहरणतः रहम या क्षमा पर-ज़ोर न डाले बल्कि समस्त क़ुव्वतों के प्रयोग के लिए वसीयत फ़रमाए।"

(हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

"समस्त हिदायतों में से केवल क़ुरआनी हिदायत ही सेहत के कामिल दर्जा पर और इन्सानी मिलावटों से पाक है।"

"जबकि प्रत्येक इलहाम इलाही यक़ीन दिलाने के लिए ही आया था लेकिन क़ुरआन-ए-करीम ने इस आला दर्जा यक़ीन की बुनियाद डाली कि बस हद ही कर दी।"

रमज़ान में जहां विशेषता क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और समझने की तरफ़ तवज्जा दें वहां दुआओं की तरफ़ भी तवज्जा दें

पाकिस्तान, बुर्कीना फासो और बंगलादेश के अहमदियों के लिए दुआ की पुनः तहरीक

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 17 मार्च 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِیْكَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ-
بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ-
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝
مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝ اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَاِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ۝
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۙ غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ
عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ۝

क़ुरआन-ए-करीम का मुक़ाम और मर्तबा और मुहासिन पिछले कुछ हफ़्तों से वर्णन हो रहे हैं। इस बात की वज़ाहत फ़रमाते हुए कि क़ुरआन के नज़दीक मज़हब का मन्सब क्या है और इन्सानी अंगों पर इस का प्रभाव है और होना चाहिए। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"यह सवाल कि मज़हब का प्रभाव इन्सानी अंगों पर क्या है इंजील ने इस का कोई जवाब नहीं दिया। क्योंकि इंजील हिक्मत के तरीक़ों से दूर है। लेकिन क़ुरआन--ए-करीम बड़ी तफ़सील से बार-बार इस मसला को हल करता है कि मज़हब का यह मन्सब नहीं है कि इन्सानों की फ़ितरती क़ुवा की तबदील करे और भेड़िए को बकरी बना कर दिखलाए।" अर्थात ताक़तवर को बिल्कुल ही कमज़ोर बना कर दिखाए "बल्कि मज़हब की सिर्फ इल्लत-ए-ग़ाई यह है कि जो क़ुवा और मुलकात फ़ितरतन इन्सान के अंदर मौजूद हैं।' जो सलाहियतें हैं जो ताक़तें हैं जो अल्लाह तआला ने उस को दी हुई हैं "उनको अपने महल और मौक़ा पर लगाने के लिए मार्गदर्शन करे।

धर्म का यह विकल्प नहीं है कि किसी फ़ितरती क़ुव्वत को बदल डाले। हाँ यह विकल्प है कि इस को महल पर प्रयोग करने के लिए हिदायत करे और सिर्फ एक क़ुव्वत उदाहरणतः रहम या क्षमा पर-ज़ोर न डाले बल्कि समस्त क़ुव्वतों के प्रयोग के लिए वसीयत फ़रमाए।

यह न कहे कि केवल रहम करो और माफ़ करो बल्कि ज़रूरत के मुताबिक़ जिस चीज़ की इस अवसर पर ज़रूरत है उसे प्रयोग करने की तलक़ीन करे। असल उद्देश्य इस्लाह और बेहतरी है और यह उद्देश्य जिस तरह भी पूरा हो उसे करने की कोशिश करनी चाहिए।

फ़रमाते हैं कि रहम या क्षमा पर-ज़ोर न डाले बल्कि समस्त क़ुव्वतों के प्रयोग के लिए वसीयत फ़रमाए "क्योंकि इन्सानी क़ुव्वतों में से कोई भी क़ुव्वत बुरी नहीं बल्कि इफ़रात और तफ़रीत और बद प्रयोगी बुरी है और जो शख़्स क़ाबिल मलामत है वह सिर्फ़ फ़ितरती क़ुवा की वजह से निंदा के योग्य नहीं बल्कि उनकी बद प्रयोगी की वजह से निंदा के योग्य है।"

(सिराजुद्दीन ईसाई के चार सवालों का जवाब, रुहानी ख़ज़ायन भाग 12 पृष्ठ 340-341)

इस की एक छोटी सी मिसाल यूं है कि एक जस्मानी तौर पर ताक़तवर आदमी है अगर अपनी ताक़त के इज़हार के लिए वह ज़ुलम ही करता रहे या साहब-ए-इख़्ते-यार है तो ज़ुलम करता रहे। दूसरों के लिए नरम दिल्ली न हो। मौक़ा महल पर अपने क़ुवा का इज़हार न हो बल्कि अपनी बरतरी साबित करना और रोब क़ायम करना ही उद्देश्य हो तो फिर ऐसा शख़्स बुरा कहलाएगा। इस की सलाहियतें जो हैं वह बुरी नहीं लेकिन इस का प्रयोग बुरा है, उस का अमल बुरा है।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि आप अलैहिस्सलाम के आने का उद्देश्य सदा-क़त-ए-क़ुरआन को साबित करना और क़ायम करना है।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "यह बात वास्तव में सच्च है कि जो मुस्लमान हैं यह क़ुरआन शरीफ़ को बिल्कुल नहीं समझते लेकिन अब ख़ुदा का इरादा है कि सही अर्थ क़ुरआन के ज़ाहिर करे। ख़ुदा ने मुझे इसी लिए मामूर किया है और मैं इस को इल्हाम और वह्यी से क़ुरआन-ए-करीम को समझता हूँ। क़ुरआन शरीफ़ की ऐसी तालीम है कि इस पर कोई एतराज़ नहीं आ सकता और तर्कों से ऐसी परिपूर्ण है कि एक फिलासफर को भी एतराज़ का मौक़ा नहीं मिलता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 167 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर अज़मत-ए- क़ुरआन वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम जमाअत को नसीहत फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन शरीफ़ पर तदब्बुर करो। इस में सब कुछ है। नेकियों और बदियों की तफ़सील है और आइन्दा ज़माना की ख़बरें हैं इत्यादि। बख़ूबी समझ लो कि यह वह मज़हब पेश करता है जिस पर कोई एतराज़ नहीं हो सकता क्योंकि उस के बरकात और समरात ताज़ा ब ताज़ा मिलते हैं। इंजील में मज़हब को कामिल तौर पर वर्णन नहीं किया गया। इस की तालीम उस ज़माना के हसब-ए-हाल हो तो हो लेकिन वह हमेशा और हर हालत के मुवाफ़िक़ हरगिज़ नहीं।" जिस ज़माने में हज़रत-ए-ईसा आए उस ज़माने के हसब-ए-हाल थी लेकिन अब नहीं। "यह फ़ख़र क़ुरआन-ए-करीम ही को है कि अल्लाह तआला ने इस में हर रोग का ईलाज बताया है और तमाम अंगों की तर्बीयत फ़रमाई है और जो बदी ज़ाहिर की है इस के दूर करने का तरीक़ भी बताया है। इस लिए क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत करते रहो और दुआ करते रहो और अपने चाल चलन को इस की तालीम के मातहत रखने की कोशिश करो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 9 पृष्ठ 122 ऐडीशन 1984 ई.)

क़ुरआन-ए-करीम पर तदब्बुर तरफ़ ध्यान दिलाते हुए आप मज़ीद फ़रमाते हैं कि "रस्म और बिदआत से परहेज़ बेहतर है। इस से रफ़्ता-रफ़्ता शरीयत में तसर्रुफ़

शुरू हो जाता है। बेहतर तरीक़ यह है कि ऐसे वज़ायफ़ में जो वक़्त उसने सर्फ करना है वही क़ुरआन शरीफ़ के सोच विचार में लगावे।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 266 ऐडीशन1984 ई.)

लोगों की कोशिश होती है कि वज़ीफ़ा बता दें, छोटी सी बात बता दें ताकि उसी पर नज़र हो, हम वक़्त लगाऐं। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि नहीं क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर करने पर वक़्त लगाओ।

कुछ लोग वज़ायफ़ में ही वक़्त सिर्फ़ करते चले जाते हैं। और जो वज़ायफ़ और वर्णन कर रहे होते हैं उनका मतलब ही बाज़ों को नहीं आता और समझते हैं कि यह उनकी रुहानी बेहतरी का वाहिद ज़रीया है। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया उसके बजाय यह वक़्त क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर पर ख़र्च करो तो ज़्यादा बेहतर है। रुहानी तरक़्क़ी इसी से हासिल कर हो।

ग़ैर अहमदी मुस्लमानों में तो बहुत सी बिदआत इस ज़रीया से राह पा गई हैं लेकिन बाअज़ अहमदी भी इस के अधीन आ गए हैं इसलिए हमें बचना चाहिए और क़ुरआन शरीफ़ का तर्जुमा और तफ़सीर पढ़ने की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा चाहिए।

अगले हफ़्ते जुमेरात से इंशा अल्लाह या बाज़ जगह बुध से रमज़ान भी शुरू हो रहा है तो इस रमज़ान में हमें विशेषता क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने पढ़ाने और समझने की कोशिश करनी चाहिए।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "दिल की अगर सख़्ती हो तो इस को नरम करने के लिए यही तरीक़ है कि क़ुरआन शरीफ़ को ही बार बार पढ़े। जहां-जहां दुआ होती है वहां मोमिन का भी दिल चाहता है कि यही रहमत-ए-इलाही मेरे भी शामिल-ए-हाल हो। क़ुरआन शरीफ़ की मिसाल एक बाग़ की है कि एक मुक़ाम से इन्सान किसी किस्म का फूल चुनता है। फिर आगे चल कर और किस्म का चुनता है। अतः चाहिए कि हर एक मुक़ाम के मुनासिब-ए-हाल उठावे।" (मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 266 ऐडीशन 1984 ई. आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि इस से रुहानी तरक़्क़ी होती है कि अहकामात और नवाही को इन्सान अपने ऊपर लागू करे। जो अल्लाह तआला ने करने के हुक्म दिए हैं उनको करे। जिनसे रोका है उनसे रुकने की कोशिश करे। इस चीज़ को देखे। यही फूल हैं जो इस बाग़ से इन्सान चुनता है।

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कुछ लोग तो अपनी इलमीयत के ज़ोअम में इस हद तक बढ़ गए हैं कि क़ुरआन-ए-करीम की बाअज़ सूरतों उदाहरणतः आप अलैहिस्सलाम ने मिसाल दी सूरा यासीन की कि इस के मुताल्लिक़ कहते हैं कि अमुक तरीक़ से पढ़ो तो बरकत होगी अन्यथा नहीं होगी। (उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 266 ऐडीशन 1984 ई.) यह बातें तो ख़ुदाई के दावे हैं। अतः इस किस्म की बातों से हमें विशेषता परहेज़ करना चाहिए।

यह वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन से एराज़ दो सूरतें होती हैं एक यह जो एराज़-ए-सूरी कहलाता है और दूसरा आराज़-ए-मानवी और इस से मुराद क्या है? एराज़ से मुराद ये है कि जिससे अमल न करना या तो सूरी तौर पर इन्सान अमल नहीं करता या मानवी तौर पर अमल नहीं करता।

इस की यह वज़ाहत फ़रमाई कि " क़ुरआन-ए-करीम से एराज़ की दो सूरतों होती हैं। एक सूरी और एक मानवी। सूरी यह कि कभी कलाम-ए-इलाही को पढ़ा ही न जाए। जैसे अक्सर लोग मुस्लमान कहलाते हैं परंतु वे क़ुरआन शरीफ़ की इबारत तक से बिल्कुल ग़ाफ़िल हैं और एक मानवी' दूसरी सूरत है "कि तिलावत तो करता है परंतु उसकी बरकात अनवार और रहमत-ए-इलाही पर ईमान नहीं होता। अतः दोनों एराज़ो में से कोई एराज़ हो इस से पर हीज़ करना चाहिए।" आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "इमाम जाफ़र का कथन है अल्लाह उचित जनता है कहाँ तक सही है कि मैं इस क़दर कलाम पढ़ता हूँ कि साथ ही इलहाम शुरू हो जाता है परंतु बात उचित मालूम होती है" आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। अल्लाह बेहतर जानता है कि सही है कि नहीं लेकिन यह बात उचित है। अर्थात कि उन्होंने यह कहा या नहीं कहा यह तो पता नहीं लेकिन बात उचित है "क्योंकि एक जिन्स की किरने दूसरी किरनों को अपनी तरफ़ कशिश करती है। अब इस ज़माना में लोगों ने हज़ारों हाशिए चढ़ाए हुए हैं। शीयों ने अलग, सुन्नीयों ने अलग।' हज़ूर एक वाक़िया वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा एक शीया ने मेरे वालिद साहिब से कहा कि मैं एक वाक्य बतलाता हूँ वह पढ़ लिया करो तो फिर तहारत और वुज़ू इत्यादि की ज़रुरत नहीं होगी बस वह कथन ही काफ़ी है आप अलैहिस्सलाम के लिए। वही वुज़ू है। वही तहारत है। फ़रमाया कि "इस्लाम में कुफ़्र नास्तिकता ज़ंदक़ा इत्यादि इसी तरह से आए हैं कि एक शख़्स वाहिद की कलाम को इस क़दर अज़मत दी गई जिस क़दर कि कलाम इलाही को दी जानी चाहिए थी। सहाबा कराम र. इसी लिए अहादीस को क़ुरआन शरीफ़ से कम दर्जा पर मानते थे। "वाक़िया वर्णन फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ैसला करने लगे तो एक बूढ़ी औरत ने उठकर कहा कि हदीस में यह लिखा है।' अर्थात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह मंसूब है।

यह भी याद रखें कि हदीसें गो बाद में जमा की गई हैं लेकिन बाअज़ दफ़ा बाज़ सहाबा लिख भी लिया करते थे।

"तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया "कि मैं एक बुढ़िया के लिए किताब अल्लाह को तर्क नहीं कर सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 6 पृष्ठ 266-267 ऐडीशन 1984 ई.)

यह रिवायत एक औरत की है जो यह कहती है लेकिन अल्लाह तआला का कलाम तो इस से मुख़्तलिफ़ है।

जो अल्लाह का कलाम कहता है वही हक़ीक़त है। अतः हक़ीक़त यही है। इसी को हमें इख़्तेयार करना चाहिए। अगर यह नहीं होगा तो फिर बिदआत फैलती चली जाएँगी।

और इसी वजह से बिदआत मुस्लमानों में फैलती चली जा रही हैं और इस तरह क़ुरआन-ए-करीम की असल तालीम से दूर कर रही हैं। अक्सर मुस्लमानों में यह बातें नज़र आती हैं जैसा कि अभी मैंने मिसाल दी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि शीया आलम का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के वालिद को यह कहना कि एक फ़िक़रा है इस को पढ़ लिया करें तो फिर न वुज़ू की ज़रूरत न तहारत की ज़रूरत।

अक्सरियत तो आम मुसलमानों की अज्ञानी है। तथाकथित उल्मा उनको जिस तरफ़ ले जाते हैं वे चल पड़ते हैं और बिदआत फैलती चली जाती हैं लेकिन इस के बावजूद इल्ज़ाम हम पर कि हम क़ुरआन-ए-करीम मे परिवर्तन करते हैं।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि मुस्लमानों की तरक़्क़ी क़ुरआन से मशरूत है

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "जब तक मुस्लमान क़ुरआन शरीफ़ के पूरे अनुसरणकर्ता और पाबंद नहीं होते वे किसी किस्म की तरक़्क़ी नहीं कर सकते। जिस क़दर वे क़ुरआन शरीफ़ से दूर जा रहे हैं इसी क़दर वे तरक़्क़ी के मदारिज और राहों से दूर जा रहे हैं। क़ुरआन-ए-करीम पर अमल ही तरक़्क़ी और हिदायत का मूजिब है। अल्लाह तआला ने तिजारत, ज़राअत और ज़राए मआश से जो हलाल हों मना नहीं किया परंतु हाँ उस को मक़्सूदबिज़्ज़ात क़रार न दिया जाए बल्कि उस को बतौर ख़ादिम-ए-दीन रखना चाहिए। ज़कात से भी यही मंशा है कि वे माल ख़ादिम-ए-दीन हो।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 29-30 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः एक मोमिन को अपनी ज़िंदगी का उद्देश्य सिर्फ दुनिया कमाना नहीं रखना चाहिए बल्कि अल्लाह तआला ने इन्सान का जो जन्म का उद्देश्य बताया है कि सही आबिद बन के रहना, अल्लाह तआला के हुक्मों पर चलना हमें उस की तलाश करनी चाहिए। ज़कात और ख़ुदा तआला की राह में ख़र्च करने का हुक्म भी इसलिए है कि वह माल सिर्फ अपनी ख़ाहिशात पूरी करने के लिए ही न हो बल्कि उसको दीन की तरक़्क़ी, हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूक़ुल् ईबाद के लिए भी ख़र्च किया जाए।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि क़ुरआन जवाहरात की थैली है और लोग इस से बे-ख़बर हैं।

फ़रमाया कि "अफ़सोस है कि लोग जोश और सरगर्मी के साथ क़ुरआन शरीफ़ की तरफ़ तवज्जा नहीं करते। जैसा कि दुनियादार अपनी दुनिया-दारी पर या एक शायर अपने अशआर पर ग़ौर करता है वैसा भी क़ुरआन शरीफ़ पर ग़ौर नहीं किया जाता।" फ़रमाते हैं कि "बटाला में एक शायर था। इस का एक दीवान है। उसने एक दफ़ा एक मिसरा कहा फ़ारसी में मिसरा है कि

"صبا شرمندہ مے گردد بہ روئے گل نگہ کردن"

अर्थात सबा फूल के चेहरे पर नज़र करने से शर्मिंदा हो जाती है। "परंतु दूसरे मिसरा की तलाश में बराबर छः महीने ईधर उधर फिरता और हैरान होता रहा। तलाश करता रहा, सोचता रहा। "अंततः एक दिन एक बज़ार की दूकान पर कपड़ा ख़रीदने गया। बज़ार ने कई थान कपड़ों के निकाले पर उस को कोई पसंद न आया। आख़िर बग़ैर कुछ ख़रीदने के जब उठ खड़ा हुआ बज़ार" कपड़ा बेचने वाला जो दुकानदार था वह "नाराज़ हुआ कि तुमने इतने थान खुलवाए और बेफ़ाइदा तकलीफ़ दी। इस पर इस को दूसरा मिसरा सूझ गया और अपना शेर इस तरह से पूरा किया।

صبا شرمندہ مے گردد بروئے گل نگہ کردن
"کہ رخت غنچہ را وا کردو نتوانست تہ کردن

कि सबा फूल के चेहरे पर नज़र करने से शर्मिंदा हो जाती है कि उसने गुच्छों के लिबास को वाकर दिया परंतु उस को समेट न सकी। आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं

"जिस क़दर मेहनत उसने एक मिसरा के लिए उठाई' इस शायर ने "इतनी मेहनत अब लोग एक आयत क़ुरआनी के समझने के लिए नहीं उठाते।" फ़रमाया "क़ुरआन जवाहरात की थैली है और लोग इस से बे-ख़बर हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 343-344 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "जिस क़दर इसरार और रमूज़ क़ुरआन शरीफ़ में हैं तौरात और इंजील में वे कहाँ? फिर क़ुरआन शरीफ़ तमाम उमूर को सिर्फ दावा ही के रंग में वर्णन नहीं करता जैसे कि तौरेत या इंजील जो दावा ही दावा करती हैं बल्कि क़ुरआन शरीफ़ इस्तदलाली रंग है।" दलील का रंग रखता है। "कोई बात वह वर्णन नहीं करता जिसके साथ उसने एक क़वी और मुस्तहकम दलील न दी हो। जैसी क़ुरआन-ए-करीम की फ़साहत ओबलाग़त अपने अंदर एक जज़्ब रखती है। जिस तरह पर इस की तालीम में माक़ूलीयत और कशिश है वैसे ही उस के दलायल प्रभावी हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 243-244 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः कोई और किताब क़ुरआन-ए-क्रीम का मुक़ाबला नहीं कर सकती और इस में आगे आप अलैहिस्सलाम यह भी फ़रमाते हैं कि जिस तरह क़ुरआन-ए-करीम तमाम किताबों से बढ़कर है इसी तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मुक़ाम भी सब नबियों से बढ़कर है।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 244 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः जब क़ुरआन पढ़ो तो फिर जो बात क़ुरआन-ए-करीम में देखो तो वहीं उस की दलील भी तलाश करो।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की इस ख़ूबी का वर्णन हुए कि क़ुरआन के मुक़ाबिल कोई जादू नहीं ठहर सकता।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "याद रखना चाहिए कि हम तो क़ुरआन शरीफ़ पेश करते हैं जिससे जादू भागता है इसके समक्ष कोई झूठ और जादू नहीं ठहर सकता। हमारे मुख़ालिफ़ों के हाथ में किया है जिसको वे लिए फिरते हैं।

निसन्देह याद रखो कि क़ुरआन शरीफ़ वह महान हर्बा है कि इस के सामने किसी बातिल को क़ायम रहने की हिम्मत ही नहीं हो सकती

यही वजह है कि कोई बातिल परस्त हमारे सामने और हमारी जमाअत के सामने नहीं ठहरता और गुफ़्तगु से इंकार कर देता है। यह आसमानी हथियार है जो कभी कुंद नहीं हो सकता।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 27 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः यह बात हमें इस तरफ़ तवज्जा दिलाती है कि हम क़ुरआन-ए-करीम पर ग़ौर-ओ-तदब्बुर की तरफ़ ज़्यादा तवज्जा दें ताकि अपनी रुहानी और इलमी हालत भी बेहतर करें और मुख़ालेफ़ीन का रद्द भी कर सकें।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन की ताबेदारी से ख़ुदा मिलता है।

अगर क़ुरआन-ए-करीम की कामिल इताअत की जाए तो फ़रमाया "हमारा सिर्फ एक ही रसूल है और सिर्फ एक ही क़ुरआन-ए-करीम उस रसूल पर नाज़िल हुआ है जिसकी ताबेदारी से हम ख़ुदा को पा सकते हैं। आजकल गरीबों के निकाले हुए तरीक़े और गद्दी नशीनों और सज्जादा नशीनों सैफ़यां" (सैफी कहते हैं मंत्र या वज़ीफ़ा जो किसी को नुक़्सान पहुंचाने के लिए चालीस दिन तक मुसलसल पढ़ा जाता है।) फ़रमाया यह सैफ़यां जो हैं "और दुआएं और दुरूद और वज़ायफ़ ये सब इन्सान को सदमार्ग से भटकाने का आला हैं। अतः तुम उनसे परहेज़ करो। इन लोगों ने आँ-हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ख़ातमुल अबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम होने की मोहर को तोड़ना चाहा गोया अपनी अलग एक शरीयत बना ली है। तुम याद रखो कि क़ुरआन शरीफ़ और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़र्रमान की पैरवी और नमाज़ रोज़ा इत्यादि जो मस्नून तरीक़े हैं उनके सिवा ख़ुदा के फ़ज़्ल और बरकात के दरवाज़े खोलने की और कोई कुंजी है ही नहीं। भूला हुआ है वह जो इन राहों को छोड़कर कोई नई राह निकालता है। नाकाम मरेगा वह जो अल्लाह और उसके रसूल के फ़र्मूदा का ताबेदार नहीं बल्कि और और राहों से उसे तलाश करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 पृष्ठ 125 ऐडीशन 1984 ई.)

(जहांगीर उर्दू लुग़त पृष्ठ 923 जहांगीर बक्स लाहौर)

क़ुरआन-ए-करीम की एक ख़ूबी आप ने यह फ़रमाई कि :

क़ुरआन-ए-करीम ने हर क़ौम के नबी पर ईमान लाना ज़रूरी क़रार दिया है।

इसलिए फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन वह काबिल-ए-ताज़ीम किताब है जिसने क़ौमों में सुलह की बुनियाद डाली और हर एक क़ौम के नबी को मान लिया और समस्त दुनिया में यह फ़ख़र ख़ास क़ुरआन शरीफ़ को हासिल है जिसने दुनिया की निसबत हमें यह तालीम दी कि لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ وَ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (आले ईमरान : 85) अर्थात तुम हे मुसलमानो यह कहो कि हम दुनिया के तमाम नबियों पर ईमान लाते हैं और उनमें तफ़र्रुक़ा नहीं डालते कि कुछ को अर्थों और कुछ को रद्द कर दें।" आपने चैलेंज फ़रमाया कि "अगर ऐसी सलहकार कोई और इल्हामी किताब है तो उस का नाम लो।" (पैग़ाम-ए-सुलह, रुहानी ख़ज़ायन भाग 23 पृष्ठ 459)

क़ुरआन-ए-करीम की ख़ूबियों में से एक ख़ूबी है कि क़ुरआन-ए-करीम में ज़ाहिरी तर्तीब का इल्तेजाम है।

इस बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "क़ुरआन-ए-करीम ज़ाहिरी तर्तीब का अशद इल्तिज़ाम रखता है। और एक बड़ा हिस्सा क़ुरआनी फ़साहत का इसी से संबंधित है। इस की वजह यह है कि तर्तीब का मलहूज़ रखना भी वुजूहे-ए-बलाग़त में से है बल्कि आला दर्जा की बलाग़त यही है जो हकीमाना रंग अपने अंदर रखती है। जिस शख़्स के कलाम में तर्तीब नहीं होती या कम होती है ऐसे शख़्स को हम हरगिज़ बलीग़-ओ-फ़सीह नहीं कह सकते।" अर्थात कि बलीग़ वह है जो मज़मून ऐसा वर्णन करने वाला हो जो अवसर के अनुसार हो और बातें पूरी तरह इस मज़मून का अहाता किए हुए भी हूँ और फ़सीह ऐसे ख़ूबसूरत शब्दों में प्रयोग किए जाएं जो ख़ूबसूरत मुतालिब भी वर्णन कर सकें और तरतीब-ए-शब्दों में भी उनमें हो। अतः आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐसे शख़्स को हम हरगिज़ बलीग़-ओ-फ़सीह नहीं कह सकते "बल्कि अगर कोई शख़्स हद से ज़्यादा तर्तीब का लिहाज़ उठा दे तो वह ज़रूर दीवाना और पागल होता है क्योंकि जिसकी तक़रीर व्यवस्थित नहीं उस के हवास भी व्यवस्थि नहीं।"अगर तर्तीब नहीं, इस में कोई जोड़ नहीं पाया जाता तो फिर इस का अर्थ है वह पागल है, दीवाना है। " फिर यह क्योंकर संभव है कि ख़ुदा तआला का वह पाक कलाम जो बलाग़त फ़साहत का दावा करके समस्त इक़साम सच्चाई के लिए बुलाता है ऐसा एजाज़ी कलाम उस ज़रूरी हिस्सा फ़साहत से गिरा हुआ हो कि इस में तर्तीब न पाई जाए।"

(तिरयाक़ु कलूब, रुहानी ख़ज़ायन भग 15 पृष्ठ 456-457 हाशिया)

अतः क़ुरआन-ए-करीम तो अल्लाह तआला का कलाम है और फ़साहत-ओ--बलाग़त से पर है। यह हो ही नहीं सकता कि इस में तर्तीब न हो। जिस तरह बाअज़ लोग एतराज़ करते हैं एतराज़ करने वाले।

क़ुरआन-ए-करीम के दो चमत्कारों का वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि 'क़ुरआन-ए-शरीफ़ के अतिरिक्त और कोई आसमानी नूरों की प्राप्ति का माध्यम मौजूद नहीं और ख़ुदा ने इस ग़रज़ से कि हक़ और बातिल में हमेशा के लिए अंतर करने के लिए क़ायम रहे और किसी ज़माना में झूठ सच्च का मुक़ाबला कर सके।

उम्मते-ए-मुहम्मदिया को इंतिहा-ए-ज़माना तक ये दो चमत्कार चमत्कार कलाम क़ुरआन और चमत्कार असर-ए-कलाम क़ुरआन अता फ़रमाए हैं।"

अर्थात एक क़ुरआन का, एक कलाम का चमत्कार है और एक उस कलाम के असर का चमत्कार है। दो मोजज़े हैं "जिनके मुक़ाबला से मज़ाहिब बातिला इब्तिदा से आजिज़ चले आते हैं। और अगर सिर्फ आजाज़-ए-कलाम क़ुरआन का चमत्कार होता और आजाज़-ए-असर क़ुरआन का चमत्कार न होता तो उम्मत मरहूमा मुह-म्मदिया को आसार और अनवार ईमान में क्या ज़्यादती होती क्योंकि मुजर्रिद ज़ोहद और इफ़्फ़त-ए-चमत्कार की हद तक नहीं पहुंच सकता।"(बराहीन-ए अहमदिया, ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 292-293 बक़ीया हाशिया दर हाशिया नंबर 1) क़ुरआन-ए--करीम की तालीम से असर भी होता है अगर हक़ीक़ी तौर पर इसको अपनाया जाए

फिर क़ुरआन-ए-करीम की पैरवी से इस जहान में आसार-ए-निजात का ज़हूर

इस बारे में आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "क़ुरआन शरीफ़ जो आँहज़रत के अनुसरण का मदार अलैहि है एक ऐसी किताब है जिसकी मुताबअत से इसी जहान में आसार-ए-नजात के ज़ाहिर हो जाते हैं क्योंकि वही किताब है कि जो दोनों तरीक़ ज़ाहिरी और बातिनी के ज़रीया से नफ़ूस-ए-नक्सा को बमरतब-ए-तकमील पहुँचाती है और शकूक और शुबहात से ख़लासी है। "जिन लोगों में नफ़ूस-ए-नाक्सा ऐसे हैं जिनमें कमी है। उनकी कमी को, कमज़ोरी को न सिर्फ यह क़ुरआन-ए-करीम दूर करता है बल्कि आला मयार तक भी ले के जाता है। फ़रमाया कि "ज़ाहिरी तरीक़ से इस तरह पर कि वर्णन उसका ऐसा जामे दक़ाएक़-ओ-हक़ायक़ है कि जिस क़दर दुनिया में ऐसे शुबहात पाए जाते हैं कि जो ख़ुदा तक पहुंचने से रोकते हैं जिनमें मुबतला हो कर सदहा झूठे फ़िरक़े फैल रहे हैं और सदहा तरह के ख़्यालात बातिला गुमराह लोगों के दिलों में जम रहे हैं सब का रद्द माक़ूली तौर पर इस में मौजूद है।" क़ुरआन-ए-करीम इतने वाज़िह तौर पर दलीलें और हक़ायक़ वर्णन करता है कि सब

शुबहात जो हैं उनको दूर करता है। हाँ शर्त समझने की है और समझने के लिए जो समझाने वाले हैं उनके कलाम से फ़ायदा उठाने की ज़रूरत है। फ़रमाया "और जो जो तालीम हक़्क़ा और कामला की रोशनी ज़ुल्मत मौजूदा ज़माने के लिए दरकार है वे सब आफ़ताब की तरह इस में चमक रही है।"मौजूदा ज़माना में भी जो अंधेरे फैल रहे हैं। मज़हब से दूरी है, बे-हयाई है, लग़वियात हैं और ख़ुदा तआला से है, यह सब जो अंधेरे हैं उनको दूर करने के लिए और रोशनी हासिल करने के लिए क़ुरआन-ए--करीम की तरफ़ रुजू करो इस में ये सब कुछ मौजूद है।

फ़रमाया कि ये सब आफ़ताब की तरह इस में चमक रही है। सूरज की तरह रोशन है इस में "और समस्त नफ़सानी रोगों का ईलाज इस में वर्णित है और तमाम मआरिफ़ हुक़्क़ा का वर्णन इस में भरा हुआ है और कोई दक़ीक़ा इलम इलाही नहीं कि जो आइन्दा किसी वक़्त ज़ाहिर हो सकता है और इस से बाहर रह गया हो। और बातिनी तरीक़ से इस तौर पर कि इस की कामिल मुताबअत दिल को ऐसा साफ़ कर देती है।' यह शर्त है पूर्ण अनुसरण। अनुसरण हो और पूर्णतः हो तो दिल को ऐसा साफ़ कर देती है "कि इन्सान अंदरूनी आलूदगियों से बिल्कुल पाक हो कर हज़रत आला से इत्तिसाल पकड़ लेता है।" अल्लाह तआला से एक ताल्लुक़ पैदा हो जाता है। "और अनवार-ए-क़बूलियत इस पर वारिद होने शुरू हो जाते हैं और इनायात-ए-इलाही इस क़दर इस पर अहाता कर लेती हैं कि जब वे मुश्किलात के वक़्त दुआ करता है तो कमाल रहमत और अतूफ़त।" अर्थात बड़ी मेहरबानी और रहमत और शफ़क़त अल्लाह तआला की होती है।" से ख़ुदावंद करीम इसका जवाब देता है और बसा--औक़ात ऐसा इत्तिफ़ाक़ होता है कि अगर वह हज़ार मर्तबा ही अपनी मुश्किलात और हुजूम ग़मों के वक़्त में सवाल करे तो हज़ारहा मर्तबा ही अपने मौला क्रीम की तरफ़ से निहायत फ़सीह और लज़ीज़ और मुतबर्रिक कलाम में मुहब्बत आमेज़ जवाब पाता है और इलहाम-ए-इलाही बारिश की तरह इस पर बरसता है और वह अपने दिल में मुहब्बत-ए- इलाही को ऐसा भरा हुआ पाता है जैसा एक निहायत साफ़ शीशा एक लतीफ़ इतर से भरा होता है और प्रेम और शौक़ की एक ऐसी पाक लज़्ज़त उस को अता की जाती है कि जो उस की सख़्त सख़्त नफ़सानी ज़ंजीरों को तोड़ कर और इस दख़ानिस्तान से बाहर निकाल कर।"अर्थात गंदी हवा और आलूदा हवा है, धुआँ है इस से बाहर निकाल कर "महबूब हक़ीक़ी की ठंडी और दिलअराम हवा से इस को हर-दम और हर क्षण ताज़ा ज़िंदगी बख़्शती रहती है।'

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 345-349 बक़ीया हाशिया दर हाशिया नंबर : 2)

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि क़ुरआन-ए-करीम निश्चित और क़तई कलाम है

फ़रमाते हैं कि " क़ुरआन-ए-करीम जो अल्लाह का कलाम है जिससे बढ़कर हमारे हाथ में कोई कलाम क़तई और निश्चित नहीं। वह ख़ुदा का कलाम है। वह शक और ज़न की आलाईशों से पाक है।"

(रिव्यू बर मुबाहिसा बटालवी-ओ-चक्कडालवी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 209)

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम अक़्वाम-ए-दुनिया को मुत्तहिद करने आया है आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "ख़ुदा ने पहले मुतफ़र्रिक़ तौर पर हर एक उम्मत को जुदा-जुदा दस्तूरुल'अमल भेजा और फिर चाहा कि जैसा कि ख़ुदा एक है वह भी एक हो जाएं तब सबको इकट्ठा करने के लिए क़ुरआन को भेजा और ख़बर दी कि एक ज़माना आने वाला है कि ख़ुदा तमाम क़ौमों को एक क़ौम बना देगा और तमाम मुल्कों को एक मुल्क कर देगा और तमाम ज़बानों को एक ज़बान बनादेगा।

(नसीम-ए-दावत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 19 पृष्ठ 428)

लोग कहते हैं कि मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब क्यों आए? इसलिए कि इस वक़्त तक उनकी अक़्ल और शऊर और जो वसायल थे वे इतने थे कि अपने ज़माने में महिदूद रहे। पहले ज़माने में अलग अलग भेजे। अब एक ज़माना ऐसा आ गया जब सब इकट्ठे हो सकते हैं तो एक कामिल शरीयत क़ुरआन-ए-करीम की शक्ल में हमें भिजवा दी और फ़रमाया कि समस्त मुल्कों को एक मुल्क बना देगा और तमाम ज़बानों को एक ज़बान बनादेगा। आज दुनिया में ग्लोबल विलेज की टर्म (term) प्रयोग होती है कि दुनिया एक हो चुकी है, एक शहर की हैसियत बन चुकी है। बहर-हाल क़ुरआन-ए-करीम ही वह कलाम है जो बावजूद इसके कि दुनिया में मुख़्तलिफ़ ज़बानें बोलने वाले भी हैं और बोली जाती हैं लेकिन दुनिया में जहां भी मुस्लमान हैं जिस क़ौम के भी मुस्लमान हैं वे उसे अरबी ज़बान में पढ़ते हैं और इसी तरह पाँच नमाज़ों में इस का प्रयोग किया जाता है।

इस बात को वर्णन फ़रमाते हुए कि क़ुरआन-ए-करीम का पहली कुतुब और नबियों पर अहसान है आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि

"क़ुरआन शरीफ़ ने पहली किताबों और नबियों पर अहसान किया है जो उनकी तालीमों को जो क़िस्सा के रंग में थीं इलमी रंग दे दिया है

मैं सच्च सच्च कहता हूँ कि कोई शख़्स उन क़िस्सों और कहानियों से निजात नहीं पा सकता जब तक वह क़ुरआन शरीफ़ को न पढ़े क्योंकि क़ुरआन शरीफ़ ही की यह शान है कि वह اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۙ وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ (अल्तारिक़ : 14-15) वह मीज़ान, मुहैमिन, नूर और शिफ़ा और रहमत है। जो लोग क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ते और उसे क़िस्सा समझते हैं। उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ नहीं पढ़ा बल्कि उस की बे-हुरमती की है। हमारे मुख़ालिफ़ क्यों हमारी मुख़ालेफ़त में इस क़दर तेज़ हुए हैं? सिर्फ़ इसी लिए कि हम क़ुरआन शरीफ़ को जैसा कि ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है कि वह सरासर नूर, हिक्मत और मार्फ़त है, दिखाना चाहते हैं और वह कोशिश करते हैं कि क़ुरआन शरीफ़ को एक मामूली क़िस्से से बढ़कर महत्व न दें। हम इस को गवारा नहीं कर सकते।

ख़ुदा तआला ने अपने फ़ज़ल से हम पर खोल दिया है कि क़ुरआन शरीफ़ एक ज़िंदा और रोशन किताब है।

इस लिए हम उनकी मुख़ालिफ़त की क्यों पर्वा करें।

(मल्फ़ूज़ात भाग 3 पृष्ठ 155 ऐडीशन 1984 ई.)

क़ुरआन-ए-की अज़मत वर्णन फ़रमाते हुए फ़रमाया कि "क़ुरआन-ए-करीम की अज़मत के बड़े बड़े दलायल में से यह भी है कि इस में अज़ीमुश्शान उलूम हैं जो तौरेत और इंजील में तलाश करने ही अबस हैं। फ़ुज़ूल हैं। वह वहां मिल ही नहीं सकते। और एक छोटे और बड़े दर्जा का आदमी अपने अपने फ़हम के मुवाफ़िक़ उनसे हिस्सा ले सकता। (मल्फ़ूज़ात भाग 4 पृष्ठ 381 ऐडीशन 1984 ई.) क़ुरआन--ए-करीम के उलूम से

अतः उसके मआनी और मुतालिब पर ग़ौर करने की हर एक को आदत डालनी चाहिए ताकि ख़ुदा तआला के कलाम की ख़ूबसूरती का भी हमें पता चले

क़ुरआन-ए-करीम के आदेशों और जिन वस्तुओं से रोका गया है के बारे में आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :"क़ुरआन शरीफ़ में अव्वल से आख़िर तक को कार्य करने है और जो नहीं करने और अहकाम इलाही की तफ़सील मौजूद है और कई सौ शाख़ें मुख़्तलिफ़ किस्म के अहकाम की वर्णन की हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 374 ऐडीशन 1984 ई.)

एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तिलावत करते हुए उन्हें तलाश करना चाहिए और फिर उनको ज़िंदगी का हिस्सा बनाना चाहिए। तभी हम ख़ुदा तआला के कलाम से हक़ीक़ी फ़ैज़ पा सकते हैं।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 376 ऐडीशन 1984 ई.)

क़ुरआन-ए-करीम कि विशेषताएं वर्णन करते हुए एक जगह आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "जानना चाहिए कि क़ुरआन-ए-करीम वह निश्चित और क़तई कलाम इलाही है जिसमें इन्सान का एक नुक़्ता या एक शाशा तक दख़्ल नहीं और वह अपने अल्फ़ाज़ और मआनी के साथ ख़ुदाए तआला का ही कलाम है और किसी फ़िर्क़ा इस्लाम को इस के मानने से चारा नहीं।" यानी उस के मानने के सिवा चारा नहीं। "इस की एक एक आयत आला दर्जा का तवातर अपने साथ रखती है वह वह्यी मुत्लवी है।" अर्थात ऐसी वह्यी है जो बार-बार पढ़ी जाने वाली वही है "जिसके हर्फ़ हर्फ़ गिने हुए हैं। वह बबाइस अपने चमत्कार के भी तबदील और तहरीफ़ से महफ़ूज़ है।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 384)

उनकी तरकीब ऐसी है कि यह भी एक चमत्कार है कि तबदीली हो ही नहीं सकती। जो करेगा वह किस तरह यह कह सकता है कि क़ुरआन-ए-करीम में तहरीफ़ करली है। क़ुरआन-ए-करीम बिगड़ता तो इस की असली हालत रह ही नहीं सकती और वह नफ़स-ए-मज़मून भी रह सकता।

फिर क़ुरआन-ए-करीम के शब्दों में की गहराई और अर्थो की ख़ूबी वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "क़ुरआन-ए-करीम के दक़ायक़-ओ--मआरिफ़-ओ-हक़ायक़ भी ज़माना की ज़रूरत के मुवाफ़िक़ ही खुलते हैं। उदाहर-णतः जिस ज़माना में हम हैं और जिन मआरिफ़ फ़ुरकानिया के बमकाबल दज्जाली फ़िर्क़ों की हमें उस वक़्त ज़रूरत आ पड़ी है वह ज़रूरत उन लोगों को नहीं थी जिन्हों ने इन दज्जाली फ़िर्क़ों का ज़माना नहीं पाया। अतः वे बातें उन पर मख़फ़ी रहें और हम पर खोली गईं।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 451)

मज़मून अवसर और स्थान और ज़माने के लिहाज़ से इस में से निकलता चला

जाता है। इस ज़माने में ज़रूरत नहीं थी। इस ज़माने में जैसी जैसी तफ़सीरें हुईं उस ज़माने के हालात की थीं। आज जो हो रही हैं वह आज के ज़माने के हालात के लिए हैं और ये सब क़ुरआन-ए-करीम से ही इस्तिंबात होती हैं, इसी से तफ़सीर मिलती है। इन्ही शब्दों में को ग़ौर करने से उनके अर्थ वाज़िह होते हैं। अतः जो ऐसी किताब है वही ताक़यामत रहने वाली किताब हो सकती है कि ज़रूरत के मुताबिक़ शब्दों में में से मुतालिब निकलते जाएं।

फिर क़ुरआन-ए-करीम की सुंदरता वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "आंतरिक मआरिफ़ क़ुरआन-ए-करीम के जिनका वजूद अहादीस-ए--सहीहा और स्पष्ट आयात से साबित है फ़ुज़ूल तौर पर कभी ज़हूर नहीं करते बल्कि ये चमत्कार फ़िर्क़ानी ऐसे ही वक़्त में अपना जलवा दिखाता है जबकि इस रुहानी चमत्कार के ज़हूर की अशद ज़रूरत पेश है।"

(इज़ाला औहाम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 465)

मआरिफ़ भी मिलते हैं और सही अहादीस से भी उनका इस्तिंबात किया जा सकता है और بَیِّن स्पष्ट रूप में जो खुली खुली आयात हैं वह भी इस का सबूत देती हैं।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"क़ुरआन शरीफ़ में सब कुछ है परंतु जब तक बसीरत न हो कुछ हासिल नहीं हो सकता।"

बसीरत शर्त है। "क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ने वाला जब एक साल से दूसरे साल में तरक़्क़ी करता है तो वह अपने पिछले वर्ष को ऐसा मालूम करता है कि गोया वह तब एक स्कूल क बच्चा था क्योंकि यह ख़ुदा तआला का कलाम है और इस में तरक़्क़ी भी ऐसी है।" यह नहीं कि हमने एक दफ़ा पढ़ लिया तो इस को सब कुछ इलम हासिल हो गया बल्कि एक साल ग़ौर करने के बाद जब अगले साल में क़दम रखता है, दुबारा ग़ौर शुरू करता है तो फिर समझता है वह जो पहले मैं पढ़ के आया हूँ वह तो कुछ भी नहीं था, वह तो बच्चों वाली बातें थीं जो कि इबगतेदाई चीज़ें थीं जो मुझे समझ आई थीं। अब मैं असल मुक़ाम पर पहुंचा हूँ और फिर इस तरह हर साल तरक़्क़ी करता चला जाता है। फ़रमाया "जिन लोगों ने क़ुरआन शरीफ़ को जुल वजूह कहा है मैं उनको पसंद नहीं करता। उन्होंने क़ुरआन शरीफ़ की इज़्ज़त नहीं की। क़ुरआन शरीफ़ को मारफ़ वाला कहना चाहिए।" मआरिफ़ से पुर कहना चाहिए। इस में बेशुमार मआरिफ़ हैं। "हर मुक़ाम में से कई मआरिफ़ निकलते हैं और एक नुक्ता दूसरे नुक्ता का नक़ीज़ नहीं होता" उसे तोड़ने वाला नहीं होता, उसको रद् करने वाला नहीं होता "मगर दुख पीढ़ा, कीना परवर और ग़ुस्सा वाले स्वभाव के साथ क़ुरआन शरीफ़ की मुनासबत नहीं है और न ऐसों पर क़ुरआन शरीफ़ खुलता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 221 ऐडीशन 1984 ई.)

यह तो ग़ौर करने वालों और पाक लोगों और अल्लाह तआला की पनाह में आने वाले लोगों, इस से इलम हासिल करने की दुआ करने वाले लोगों पर ही उस के हक़ायक़ खुलते हैं।

फ़रमाते हैं "क़ुरआन-ए-करीम बिला-शुबा जामे हक़ायक़-ओ-मआरिफ़ और हर ज़माना की बिदआत का मुक़ाबला करने वाला है। इस आजिज़ का सीना उस की चशमदीद बरकतों और हिक्मतों से परिपूर्ण है। " इस ज़माने में, हमारे ज़माने में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ही हैं जिन्हों ने इस के मआरिफ़ और हक़ायक़ हम पर ज़ाहिर फ़रमाए और आप अलैहिस्सलाम के कलाम से इस की मज़ीद तशरीह होती है और इस को समझ के अगर पढ़ा जाए तो क़ुरआन-ए-करीम की ख़ूबियों का और तालीम का और मआरिफ़ का इलम मज़ीद बढ़ता है। फ़रमाया " बिलाशुबा हमारी भलाई और तरक़्क़ी इलमी और हमारी दाइमी फ़ुतूहात के लिए क़ुरआन हमें दिया गया है और इस के रमूज़ और इसरार ग़ैर मुतनाही हैं जो बाद तज़किया नफ़्स इशराक़ और रोशन ज़मीरी के नज़रिया से खुलते हैं।" फ़रमाया

"ख़ुदा तआला ने जिस क़ौम के साथ कभी हमें टकरा दिया इस क़ौम पर क़ुरआन के ज़रीया से ही हमने फ़तह पाई। वह जैसा एक उम्मी देहाती की तसल्ली करता है वैसा ही एक फ़लसफ़ी माक़ूली को संतोष बख़्शता है।

यह नहीं कि वह सिर्फ़ एक गिरोह के लिए उतरा है दूसरा गिरोह इस से वंचित रहे। बिलाशुबा इस में प्रत्येक शख़्स और प्रत्येक ज़माना और प्रत्येक इस्तदाद के लिए ईलाज मौजूद है। जो लोग माकूसउल-ख़लक़त और नाक़िसुल-फ़ितरत नहीं वह क़ुरआन की इन अज़्मतों पर ईमान लाते हैं।" अर्थात अपनी पैदाइश को न समझने वाले जो कमअक़्ल लोग हैं या तरक़्क़ी की बजाय ज़वाल की तरफ़ जाने वाले लोग हैं, रुहानी लिहाज़ से कमअक़्ल हैं ऐसे लोगों को तो क़ुरआन फ़ायदा नहीं पहुँचाता लेकिन अगर वह ऐसे नहीं हैं तो अज़्मतों पर ईमान लाना उनके लिए लाज़िमी है और वह ईमान लाते हैं "और उनके अनवार से मुस्तफ़ीद होते हैं।"

(अल-हकायक लुधियाना, रुहानी ख़ज़ायन भाग 4 पृष्ठ 110)

फ़रमाते हैं कि "मुझे फ़रमाया गया है कि तमाम हिदायतों में से .. यह अल्लाह तआला ने आपको फ़रमाया

"तमाम हिदायतों में से सिर्फ़ क़ुरआनी हिदायत ही सेहत के कामिल दर्जा पर और इन्सानी मिलावटों से पाक है।"

(अर्बईन नंबर 1 रुहानी ख़ज़ायन भाग 17 पृष्ठ 345)

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। "हमारा तो मज़हब यह है कि उलूम तिब्बी जिस क़दर तरक़्क़ी करेंगे और अमली रंग इख़्तेयार करेंगे क़ुरआन-ए-करीम की अज़्मत दुनिया में क़ायम होगी।"

(मल्फ़ूज़ात 2 पृष्ठ 87 ऐडीशन 1984 ई.) अतः हमारे दुनियावी उलूम में जो तहक़ीक़ करने वाले हैं उनको भी क़ुरआन-ए-करीम से मदद लेनी चाहिए और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से बहुत सारे ऐसे हैं जो लेते हैं। अपने मज़ामीन लिखते भी हैं। और क़ुरआन-ए-करीम की बरतरी साबित करनी चाहिए कि किस तरह इस में उलूम छिपे हैं।

डाक्टर अब्दुल सलाम साहिब भी हमेशा इसी उसूल पर काम करते रहे।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया। "क़ुरआन शरीफ़ निसन्देह ग़ैर महिदूद मआरिफ़ पर मुश्तमिल है और प्रत्येक ज़माना की ज़रूर का कामिल तौर पर मुत-कफ़्फ़िल है।"

(ईज़ाला औहाम हिस्सा अव्वल, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 261)

फ़रमाते हैं कि "जो मआरिफ़-ओ-हक़ायक़-ओ-कमालात हिक्मत-ओ-बलाग़त क़ुरआन-ए-करीम में अकमल और उत्तम तौर पर पाए जाते हैं यह अज़ीमुश्शान मर्तबा और किसी किताब को हासिल नहीं।"

(तौज़ीहुल मराम, रुहानी ख़ज़ायन भाग 3 पृष्ठ 86)

फ़रमाया "क़ुरआन-ए-करीम को ख़ुदा तआला ने ख़ैर कहा है। इसलिए फ़रमाया। اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (अल् बकरः : 270) अतः क़ुरआन-ए-करीम मआरिफ़ और उलूम के माल का ख़ज़ाना है। ख़ुदा तआला ने क़ुरआनी मआरिफ़ और उलूम का नाम भी माल रखा है। दुनिया की बरकतें भी इसी के साथ आती हैं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 328 ऐडीशन 1984 ई.)

फिर एक चेतावनी देते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि "यक़ीनन याद रखो जो गुनाह से बाज़ नहीं आता वह आख़िर मरेगा और ज़रूर मरेगा। अल्लाह तआला ने अंबिया और रसुल को इसी लिए भेजा और अपनी आख़िरी किताब क़ु-रआन-ए-मजीद इस लिए नाज़िल फ़रमाई कि दुनिया उस ज़हर से हलाक न हो बल्कि उस की तासीरात से वाक़िफ़ हो कर बच जाए।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 185 ऐडीशन 1984 ई.)

अतः हर अहमदी का यह भी काम है कि जहां वह अपनी हालत क़ुरआन-ए--करीम की तालीम के मुताबिक़ ढालने की कोशिश करे वहां दुनिया को भी इस तालीम से आगाह करे और रुहानी और माद्दी तबाही से उन्हें बचाए। आप अलैहि-स्सलाम फ़रमाते हैं कि

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन नबिय्यीन हैं और क़ुरआन-ए--करीम ख़ातमुल् कुतुब। अब कोई और कलिमा या कोई और नमाज़ नहीं हो सकती। जो कुछ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया या कर के दिखाया और जो कुछ क़ुरआन शरीफ़ में है इस को छोड़कर निजात नहीं मिल सकती। जो इस को छोड़ेगा वह जहन्नुम में जावेगा। यह हमारा मज़हब और आस्था है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 8 पृष्ठ 252 ऐडीशन 1984 ई.)

जो यह अक़ीदा रखता हो वह क़ुरआन-ए-करीम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तौहीन का मुर्तक़िब किस तरह हो सकता है? काश कि यह बात आम अलमुसलेमीन को भी समझ आ जाए और वह शर पसंद उल्मा के चंगुल से निकल कर ज़माने के इमाम को पहचानने बनें।

फिर आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "निश्चित और कामिल और आसान ज़रीया शनाख़्त उसूल-ए-हक़्क़ा का और उन सब अक़ायद का कि जिनके इलम निश्चित पर हमारी निजात मौक़ूफ़ है सिर्फ़ क़ुरआन है।

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 77)

फ़रमाते हैं "ख़ुदा तआला ने तो फ़रमाया है اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّکۡرَ وَ اِنَّا لَہٗ لَحٰفِظُوۡنَ (उल् हिजर : 10) हम ही ने इस क़ुरआन को नाज़िल किया और हम ही उस की मुहाफ़िज़त करेंगे। अर्थात जब उसके मआनी में गलतियां वारिद होंगी तो इस्लाह के लिए हमारे मामूर आया करेंगे।" और अपने इस वादे के मुताबिक़ अल्लाह तआला

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 27 April 2023 Issue No. 17

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ने मामूर-ए-ज़माना हज़रत मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादयानी अलैहिस्सलाम को भेजा।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के इस इरशाद पर ग़ौर करो और देखो ज़माने की क्या हालत है। ग़ैर मज़ाहिब के लोग पकड़ पकड़ कर तुम्हें अपने दीन से हटा रहे हैं, दज्जाली चालें चल रहे हैं लेकिन तुम आने वाले मसीह-ओ-महदी को दज्जाल कह कर इस से मुस्लमान दुनिया को दूर करने की कोशिश कर रहे हो। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तुम मेरे ऊपर मत ख़्याल करो। न ख़्याल करो कि मैं आ गया मैंने ये दावा किया। ज़माने को देखो। सदी की इबतेदा और बैरूनी हमलों और अंदरूनी आमाल को देखकर ख़ुद ग़ौर और फ़िक्र करो कि आया दज्जाल की ज़रूरत है इस ज़माने में या महदी और मसीह की। आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि तास्सुब बुरी बला है। तास्सुब वालों ने तो किसी रसूल को भी नहीं माना।

(उद्धृत मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 230 ऐडीशन 1984 ई.)

अल्लाह तआला मुस्लमानों को अक़्ल दे और ये समझें क़ुरआन-ए-करीम की विशेषतों को वर्णन फ़रमाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया : "क़ुरआन शरीफ़ में दो अमर का इल्तज़ाम अव्वल से आख़िर तक पाया जाता है। एक अकली वजूह और दूसरी इल्हामी शहादत। ये दोनों अमर फुर्क़ान मजीद में दो बुज़ुर्ग नहरों की तरह जारी हैं जो एक दूसरे के मुहाज़ी और एक दूसरे पर-असर डालते चले जाते हैं।"

(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 81 हाशिया नंबर : 4)

अर्थात बराबर चल रही हैं। एक दूसरे के मुतवाज़ी चल रही हैं और असर भी दोनों डाल रही हैं।

फ़रमाया कि "क़ुरआन-ए-करीम का यह उद्देश्य था कि हैवानों से इन्सान बनावे और इन्सान से बाअख़लाक़ इन्सान बनावे और बाअख़लाक़ इन्सान से बाख़ुदा इन्सान बनावे।"(इस्लामी उसूल की फ़िलोसफ़ी, रुहानी ख़ज़ायन भाग 10 पृष्ठ 329)

और अरबों में हम देखते हैं कि यह उद्देश्य पूरा हुआ और कमाल रंग में पूरा हुआ। चंद साल की बात है कि मुझसे एक यहूदी ने ख़ुद ये ज़िक्र किया कि मैं मुस्लमान तो नहीं लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रसूल ज़रूर मानता हूँ क्योंकि इस ज़माने के जो अरब बद्दूओं की हालत थी और जिस तरह इन्क़लाबी तौर पर उनको बदला गया है यह एक रसूल का ही काम हो सकता है कोई आम आदमी नहीं कर सकता। वही कर सकता है जिसको अल्लाह तआला कि सहायता प्राप्त हो।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं : "क़ुरआन-ए-करीम को देखकर हैरत होती है कि इसी उम्मी ने किताब और हिक्मत ही नहीं बतलाई बल्कि तज़किया नफ़्स की राहों से वाक़िफ़ किया और यहां तक कि أَيَّدَهُمْ بِرُوحٍ مِّنْهُ (अल् मुजादल : 23) ''अर्थात उनकी वह अपने अमर से ताईद करता है। यहां "तक पहुंचा दिया। देखो और ध्यान से देखो कि क़ुरआन-ए-करीम हर तर्ज़ के तालिब को अपने मतलूब तक पहुँचाता और हर रास्ती और सदाक़त के प्यासे को सेराब करता है।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 122 ऐडीशन 1984 ई.)

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :

"अगरचे प्रत्येक इलहाम-ए-इलाही यक़ीन दिलाने के लिए ही आया था लेकिन क़ुरआन-ए-करीम ने इस आला दर्जा यक़ीन की बुनियाद डाली कि बस हद ही कर दी।"(बराहीन-ए-अहमदिया, रुहानी ख़ज़ायन भाग 1 पृष्ठ 80 हाशिया नंबर : 4)

अफ़राद जमाअत को क़ुरआन-ए-करीम की तालीम पर मुकम्मल अमल करवाने के लिए आप ने फ़रमाया। अपने शरायत बैअत में भी यह रखा। इसलिए छुट्टी शर्त बैअत, शुशम जो है वह यह है "कि इत्तिबा रस्म और मुताबेत तामसिक इच्छाओं से बाज़ आएगा और क़ुरआन शरीफ़ की हुकूमत को पूर्णतः अपने सिर पर क़बूल कर लेगा और अल्लाह के आदेशों और रसूल के आदेशों को अपनी हर एक राह में दस्तूर उल-अमल क़रार देगा।" (इज़ाला औहाम, रुहानी खजायन 3 पृष्ठ 564)

लेकिन उपद्रवी उलमाए जो अक़्ल के अंधे हैं उनके नज़दीक हम फिर भी क़ुरआन-ए-करीम में तहरीफ़ करने वाले हैं।

आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हम इलाही कलाम की किसी आयत में तग़ईर और तबदील और तक़दीम और ताख़ीर और फ़िक्रात तराशी के मजाज़ नहीं हैं।' न हम तबदीली कर सकते हैं। न कोई तग़य्युर पैदा कर सकते हैं। न इस से आगे बढ़ सकते हैं। न इस में कमी कर सकते हैं। न ज़्यादती कर सकते हैं। किसी किस्म के फ़िक़रे बनाने के हम मजाज़ नहीं हैं "मगर सिर्फ इस सूरत में कि जब ख़ुद नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया हो।' हाँ अगर कहीं साबित हो जाए कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसा किया है तो फिर ठीक है हमें बताओ। फ़रमाया और यह साबित हो जाए कि ऐसा क्या हो "और यह साबित हो जायए कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप बज़ात-ए-ख़ुद ऐसी तग़य्युर और तबदील की है और जब तक ऐसा साबित न हो तो हम क़ुरआन की तौसीअ और तर्तीब को ज़ेर-ओ-ज़बर नहीं कर सकते और न इस में अपनी तरफ़ से बाअज़ फ़िक्रात मिला सकते हैं और अगर ऐसा करें तो अल्लाह के निकट मुजरिम और काबिल-ए-मुआख़ज़ा हैं।" (अतमामे हुज्जत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 8 पृष्ठ 291)

आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जब ऐसा हो ही नहीं सकता तो फिर हमें मुजरिम क्यों ठहराते हो? और अगर हमने ऐसा कर दिया तो फिर हम अल्लाह तआला के नज़दीक मुजरिम हैं। अतः जब ख़ुद हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने क़ुरआन-ए-करीम में से हर किस्म की तहरीफ़ और तबदीली की नफ़ी कर दी और क़ुरआन-ए-करीम में हर किस्म की तहरीफ़ और तबदीली की नफ़ी कर के यह ऐलान फ़र्मा दिया कि अगर हम ऐसा करने वाले हों तो मुजरिम हैं और अल्लाह तआला के सामने क़ाबिल माख़ज़ा हैं। अल्लाह तआला के नज़दीक क़ाबिल माख़ज़ा हैं लेकिन हम पर इल्ज़ाम लगाने वाले जो ये लोग हैं अपने आपको ख़ुदा तआला से भी बड़ा समझते हैं कि अल्लाह तआला तो बेशक हमें मुजरिम न बनाए लेकिन उन लोगों ने मुजरिम बनाकर हमारा माख़ज़ा ज़रूर करना है जो आजकल यह शोर मचाते रहते हैं। अल्लाह तआला ऐसे लोगों के शर से हर अहमदी को बचाए और उनके शर उन पर उलटाए।

हमें हक़ीक़ी माअनों में क़ुरआन-ए-करीम को समझने और इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

पाकिस्तान के अहमदियों के लिए और पाकिस्तान में देश के उमूमी हालात के लिए दुआ करें। बुर्कीना फासो में अहमदियों के लिए और देश के उमूमी हालात के लिए दुआ करें। बंगलादेश के अहमदियों के लिए दुआ करें अल्लाह तआला उनको भी महफ़ूज़ रखे। वहां फिर आज शायद मौलवियों ने कुछ शोर शराबा करना था। दुनिया के हर मुल्क में जहां-जहां अहमदी हैं उनके लिए दुआ करें

रमज़ान भी अब शुरू हो रहा है जैसा कि मैंने कहा था इस में जहां विशेषता क़ुरआन-ए-करीम को पढ़ने और समझने की तरफ़ तवज्जा दें वहां दुआओं की तरफ़ भी ख़ास ध्यान दें।

अल्लाह तआला हम सबको उस की तौफ़ीक़ भी अता फ़रमाए और रमज़ान के फ़ैज़ से फ़ैज़याब होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए

★ ★ ★

## 128वां जलसा सालाना क़ादियान 29, 30, और 31 दिसम्बर 2023 ई. के आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 128वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए 29,30,31 दिसंबर 2023 ई. (दिन शुक्रवार, शनिवार और रविवार) की तिथियों की मंज़ूरी प्रदान की है।

जमाअत के लोग अभी से दुआओं के साथ इस मुबारक जलसे में शामिल होने की नियत करके तैयार आरंभ करदें। अल्लाह तआला हम सबको इस अल्लाह की खातिर आयोजित होने वाले इस जलसे से लाभान्वित होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और सईद रूहों के लिए हिदायत का माध्यम बनाए। इस जलसे के हर प्रकार से सफ़ल होने के लिए दुआएं करते रहें। आमीन॥

(नाज़िर इस्लाह वा इरशाद क़ादियान)

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad